चैतन्य लहरी

मार्च–अप्रैल 2005

इस अंक में

1 सहस्रार पूजा इटली 4. 5. 86	3
2 महाकाली पूजा– लोनावाला– 19. 12.82	11
3 परम पूज्य श्रीमाताजी के तीन पत्र	17–21
4 प्लूटो नक्षत्र पर रे हेरिस के विचार	22
5 माँ का प्रेम कवच	26
6 परम पूज्य श्रीमाताजी का प्रवचन 29. 3.75	27
7 परम पूज्य श्रीमाताजी का प्रवचन मुम्बई–30.3. 75	34

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पॉड रोड, कोठरुड
पुणे – 411 029

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
W.H.S 2/47 कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्रा, नई दिल्ली–110015
मोबाइल : 9810452981, 25268673

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:–

श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टेकनोलोजीज प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली–110 019
फोन : 26216654, 26422054

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी–11–(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110 034
दूरभाष : 011–55356811
प्रातः 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं: 08.30 बजे ये 10.30 बजे

सहस्रार पूजा
इटली
4.5.1986
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज महान दिन है क्योंकि आज सोलहवाँ सहस्रार दिवस है अर्थात् (Coil) कुण्डल की उच्चतम अवस्था तक पहुँचने के लिए सोलह मनके या सोलह क्रियाएं। अब ये पूर्ण हैं। श्री कृष्ण को पूर्णावतार कहा जाता है क्योंकि उनकी सोलह कलाएं (पंखुड़ियां) हैं। तो अब हमारा प्रवेश एक अन्य आयाम में होता है। पहला आयाम वो था जिसमें हमारा आत्म–साक्षात्कार हुआ। विकास प्रक्रिया में पशुओं को बहुत सी उन चीजों की चेतना नहीं होती जिनके बारे में मानव को चेतना होती है जैसे पशु भौतिक पदार्थों (Matter) को अपने लिए उपयोग नहीं कर सकते। उन्हें अपने विषय में बिल्कुल चिन्ता भी नहीं होती। किसी पशु को यदि आप दर्पण दिखाएं तो अपने प्रतिबिम्ब को देखकर वह प्रतिक्रिया नहीं करता। मनुष्य बनने के बाद अपनी चेतना द्वारा हमें उन बहुत सी चीजों का ज्ञान हो जाता है जिनके विषय में पशु होते हुए हम अनभिज्ञ थे। मस्तिष्क से पशु ये नहीं समझ सकता कि भौतिक पदार्थों को वह अपने उपयोग में ले सकता है।

मानव रूप में भी आप सबको इस बात का ज्ञान न था कि आपके अंदर चक्र स्थापित हैं। आपकी चेतना अभी भी चक्रों की अचेतन कार्यशैली के माध्यम से तथा मस्तिष्क की चेतन कार्यशैली के माध्यम से कार्य कर रही थी। स्वचालित नाड़ी प्रणाली को आप न कभी अपनी नस–नाड़ियों पर महसूस कर पाए थे और न ही इनकी कार्यशैली को समझ पाए थे। आप ये भी न जान पाए थे कि अन्य चीज़ों का प्रभाव आप पर कैसा पड़ रहा है। मानव को दी हुई स्वतंत्रता के परिणाम–स्वरूप उसने सभी प्रकार के विचारों को अपने मस्तिष्क में,अपने सहस्रार में एकत्र कर लिया, बिना इसके प्रति चेतन हुए (बिना इसकी सच्चाई जाने)। उन्होंने सहस्रार मस्तिष्क को सभी प्रकार के व्यर्थ के कार्यों के लिए उपयोग किया। उन्हें श्री कृष्ण जी की उस चेतावनी का भी ज्ञान न था जिसमें उन्होंने कहा कि मानवीय चेतना को यादि आप उत्थान के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य के लिए उपयोग करते हैं तो आपका पतन हो जाएगा।

पश्चिम में लोगों ने सोचा कि मस्तिष्क शक्ति का उपयोग करके वे भौतिक पदार्थों को अपने हित में उपयोग कर सकते हैं। ऐसा यदि उन्होंने आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् किया होता तो अत्यन्त भिन्न स्थिति होती क्योंकि आत्म–साक्षात्कार प्राप्ति के पश्चात् आपको चैतन्य लहरियों तथा चक्रों का ज्ञान हो जाता है। इस नई चेतना द्वारा आप सभी गलत चीज़ों को छोड़ देते। परन्तु ये तो ऐसा है जैसे किसी लालची व्यक्ति को थोड़ा सा धन मिल जाए और वो सारा का सारा खर्च डाले।अब इस समस्या ने आपके मस्तिष्क को जटिल बना दिया है।

जिस प्रकार से हम मशीनों का उपयोग कर रहे हैं हमने स्वयं को ही मशीन बना लिया है। हमारे अन्दर भावनाएं नही रही और प्राकृतिक रूप से या स्वाभाविक रूप से हम किसी से भी संबंध नहीं रख सकते। मानवीय चेतना में आपने अन्य लोगों से तथा अपने आप से जुड़े रहना सीखा था परन्तु इस अहं चालित विचारधारा ने आपको स्वाभाविक, सच्चे जीवन से अलग कर दिया है और हम अस्वाभविक हो गए हैं। जैसे आजकल अक्खड़ और पाखंडी होने का फैशन हो गया है। ये कार्य आपके उत्थान एवं विकास प्रक्रिया के विरूद्ध है। सामूहिक सूझ–बूझ

के आधार पर जो भी संस्थाएं आपने बनाई हैं वो भी बनावटी हैं। तत्पश्चात् एक आंदोलन चलाया गया कि हमें स्वाभाविक बनना है। ये भी अस्वाभाविक की नकल करने जैसा है। स्वाभाविक का अर्थ ये बिल्कुल नहीं है कि हम बनावटी बन जाएं, इसका अर्थ है विकसित होना (To Evolve)। सृष्टि का अर्थ ही विकसित होना है।

अक्खड़पने की धारणा आपने आसानी से स्वीकार कर ली क्योंकि आपमें मस्तिष्क है और अपने मार्ग में आने वाली हर चीज़ को आप स्वीकार कर लेते हैं। आप इतने अस्वाभाविक हो जाते हैं कि स्वयं को महसूस करने के लिए भी आपको किसी न किसी संवेदना की आवश्यकता पड़ती है। जीवन के हर कदम पर धारणात्मक अस्वाभाविक सूझ–बूझ है, उदाहरण के रूप में यौन सम्बन्ध अत्यन्त स्वाभाविक चीज़ है परन्तु आप इसे इतना अस्वाभाविक बना देते हैं कि अब आपके मस्तिष्क में भी इसी का स्थान है। इस प्रकार आपने न केवल अपने मूलाधार में श्री गणेश को सुप्त कर दिया है बल्कि अपने मस्तिष्क में महागणेश को भी सुला दिया है।

यहाँ तक कि कला भी निर्धारित नियमों के अनुसार होनी चाहिए। इसलिए आप सभी की भर्त्सना करते हैं और अंततः इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि कला अत्यन्त नीरस है। जैसे गन्ने से जब पूरा रस निचुड़ जाता है तो बचा हुआ भाग कला है। जो मस्तिष्क हृदय का पोषण नहीं करता वह तो रोबोट की तरह से पूर्णतः बनावटी मस्तिष्क है। और लोग रोबोट की तरह से बन गए हैं। कोई भी कुशाग्र बुद्धि मानव रोबोट को चला सकता है। आपमें क्योंकि अपना दिल नहीं है अतः मस्तिष्क का नियंत्रण भी कोई ऐसा व्यक्ति करेगा जिसमें आपसे अधिक शक्तिशाली मस्तिष्क हो। ये सभी धारणाएं विनाशकारी हैं। जैसे हिटलर के मस्तिष्क में एक धारणा बन गई कि वह आर्य है और श्रेष्ठतम प्रजाति का है। पूरे विश्व को नष्ट कर देने में भी उसे कोई हिचकिचाहट न थी। धर्म के क्षेत्र में भी ऐसा ही है। सभी धर्मों को धारणाओं के प्यालों में भर दिया गया। सर्वप्रथम इन लोगों ने राजनैतिक प्रभुत्व पा लेने का प्रयत्न किया।

मैंने जब अपना जीवन शुरु किया तो अत्यन्त जटिल सहस्रार देखने को मिले। अपनी चेतना के अन्दर रहते हुए जितना मैंने उन जटिलताओं को सुलझाने का प्रयत्न किया उतना ही ये कार्य कठिन होता चला गया क्योंकि आप यदि मेरी आयु को देखें, तो आप देख सकते हैं कि पचास सालों में मानव कितना जटिल हो गया है ! सहस्रार खोलने के पश्चात् जब मैं पश्चिम में आई तो उन सोलह सालों में मैंने देखा कि लोग अब सुधरने के योग्य नहीं रहे। अब आप लोगों के उत्थान के लिए प्रबन्ध कर दिया गया है।

आप देख सकते हैं कि आज जिस कार्यक्रम के लिए पाँच सौ लोग आएं हैं। दो सप्ताह बाद वहाँ कोई दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि जब उत्थान घटित होता है तो कुण्डलिनी अहं को बाहर ढकेलती है और साधक को सत्य के समीप लाती है। परन्तु पुनः वही अहम्, जो कि अत्यन्त तेज रफतार से बढ़ रहा होता है कुण्डलिनी की गति को नियंत्रित करके पूरे सिर को ढक लेता है। तब यह व्यक्ति को मशवरा देता है कि किस प्रकार तुम उस दिव्य जीवन में जा सकते हो............ तुम्हें शराब छोड़नी पड़ेगी, सारा पागलपन, जीवन का आनन्द त्यागना पड़ेगा और पागल् होने की पूर्ण स्वतंत्रता से हाथ धोने पड़ेंगे। उनके मस्तिष्क में ये बात भरने के लिए आपको वास्तव में कुछ अटपटा करना पड़ता है। उदाहरण के रूप में खाली टीनो को लैम्प बताकर बेचने वाला कोई व्यक्ति अमीर हो गया है। ये सारी

चीजें जो यहाँ पर स्वाभाविक सौन्दर्य या प्राकृतिक आनन्द के करीब हैं उन्हें परिष्कृत (Sophisticated) मानकर स्वीकार कर लिया जाता है। दूसरी ओर आसुरी विद्या ने नियंत्रण कर लिया है। श्री कृष्ण ने गीता के पहले अध्याय में चेतावनी दी है कि यदि आसुरी विद्या व्याप्त हो जाएगी तो शुद्ध विद्या आसुरी विद्या की गति का मुकाबला न कर पाएगी। जैसे अमेरिका के सहजयोगियों में बहस छिड़ गई कि मेरा फोटो बैठक में होना चाहिए या नहीं। परन्तु आप यदि उनसे कहें कि अपने नाखुनों को काला रंग लें, अपने चेहरों पर काला रंग लें और काले कपड़े पहन लें तो ये कार्य वे तुरन्त कर लेंगे। इस स्थिति में जबकि हम सहजयोगी हैं अब भी हम अपने परमेश्वरी जीवन (Godly life) से शर्मिन्दा हैं।

हिप्पी, सड़ैल (Punks) और मूर्ख बनने के लिए उन लोगों ने अपना सारा जीवन, समय और पैसा लगा दिया, अपनी वेशभूषा, अपने परिवार, अपनी जीवन शैली को बदलकर वे पूरी तरह से ऐसे जीवन के प्रति समर्पित हो गए। परन्तु सहजयोगियों को जब सहजयोग की दिव्यता पर विश्वास हो जाता है फिर भी वे उसके विषय में शर्म करते हैं। अब आप जानते हैं कि आपकी माँ आपसे कोई पैसा नहीं लेतीं, बल्कि वो तो जेब से खर्चती हैं। उससे (सहजयोग) से आपको लाभ हुआ है। परन्तु जब देने की (सहजयोग) बात आती है तो सभी को शर्म आती है ! ऐसी पृष्ठभूमि से आप परमात्मा की कृपा के प्रकाश में आ रहे हैं। परन्तु आप उसे लपकना नहीं चाहते। शनैःशनैः आप उसके लिए समय लेना चाहते हैं। आपकी गति इतनी धीमी है कि हो सकता है आप अपना अवसर खो दें।

तो सहजयोगियों की चेतना जिसमें आप चक्रों और चैतन्यलहरियों का ज्ञान है, आप जानते हैं कि किस प्रकार अन्य लोगों से व्यवहार करना है, फिर भी इस सारे ज्ञान को आप अपने निजी लाभ के लिए उपयोग करते हैं। इस प्रकार इस नई चेतना में होते हुए भी आप पर भूतकाल का साया बना रहता है। पशुओं को तैरने का ज्ञान स्वाभाविक रूप से होता है, उन्हें तैरना सीखना नहीं पड़ता, परन्तु मनुष्यों को सीखना पड़ता है। पशुओं की सारी तकनीक मानव भूल गया है और उसने मनुष्यों की तकनीके अपना ली हैं। परन्तु सहजयोग में इस जीवन में आपने आत्मसाक्षात्कार पाया है और इसी जीवन में आपने उन्नत होना है तथा इसी जीवन में उच्चतम स्थिति को प्राप्त करना है।

समय बहुत कम है और पृष्ठभूमि बहुत अंधेरी है। आप ऐसे लोगों से घिरे हुए हैं जो हर क्षण विध्वंसक धारणाएं उगल रहे हैं। आप लोगों ने ही सबसे तेजी से बाहर निकलना है। यद्यपि आप ये समझते हैं कि आपकी चेतना सबसे भिन्न है फिर भी आपके अन्दर एक प्रकार का आलस्य सहज–योग को वैसे स्वीकार नहीं करता जैसे करना चाहिए कि मैने आज सहजयोग के लिए क्या किया। परन्तु आप तो अब भी अपनी नौकरियाँ, धनार्जन और सहजयोग के लिए अर्थहीन लोगों से अपने सम्बन्धों में अत्यन्त व्यस्त हैं। हमें उस बिन्दु तक उन्नत होने का एक ऐसा पुरजोर प्रयत्न करना होगा कि जो ज्ञान हमें प्राप्त है, जिस पर हम विश्वास करते हैं, उसी के अनुसार कार्य करें और उसी से एकरूप हो जाएं। विचारों (Concepts) से आप ऐसा नहीं कर पाते। यही समस्या है। उदाहरण के रूप में एक कट्टरपंथी ये मानता है कि अपने धर्म में वह फलां–फलां कार्य कर सकता है और वह ऐसा करेगा। परन्तु धारणाएं वास्तविकता

नहीं होतीं। धारणाओं ने न तो कुछ प्राप्त करके दिखाया है और न ही कोई महत्वपूर्ण लाभ पहुँचाया है, फिर भी लोग इनमें फंसे हुए हैं।

हम जब स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए लड़ रहे थे तो मेरे पिताजी ने अपनी सारी सम्पत्ति त्याग दी, अपनी वकालत त्याग दी और परिवार में ग्यारह बच्चों समेत जहाँ हम महलों में रहते थे उन्हें त्याग कर और वर्षो तक हम झोंपड़ियों में रहने लगे। स्थूल स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए हम कुछ भी करते हैं। परन्तु सूक्ष्म स्वतंत्रता के लिए सहज–योगियों को हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए। पहली चीज़ है आत्म–साक्षात्कार पाना और अपने चेतन मस्तिष्क में हर समय इस बारे में सचेत रहना कि बाकि सभी मनुष्यों से आप कहीं उच्च हैं। पूरी मानवता का उद्धार आप पर निर्भर है। आप ही सृजन के लक्ष्य को पूर्ण करेंगे। अतः सर्वप्रथम आपको अपनी चेतना में चेतन होना होगा कि आप इतने महत्वपूर्ण हैं और इसी कारण से आपको आत्म–साक्षात्कार दिया जाता है। अपने अहं और बंधनों में फँसकर आप कैसे रह सकते हैं ? बन्धन इस प्रकार के होते हैं..... मान लो आप इसाई धर्म से आए हैं तो आप थोड़ा सा इसाई धर्म सहजयोग में ले आते हैं या यदि आप हिन्दू हैं तो हिन्दू धर्म का कुछ तत्व आप सहजयोग में लाना चाहते हैं। इन सभी धर्मों का सार तत्व सहजयोग में है परन्तु हम केवल स्थूल मूर्खता ही ले पाते हैं ! हमारे सहस्रार पर ये सारी चीज़ें कचरे (Dirt) के समान हैं जिन्हें झटक दिया जाना चाहिए।

यद्यपि अब आपको चक्रों का ज्ञान है और इनके प्रति आप चेतन हैं फिर भी आप इन्हें स्वच्छ नहीं रखते। सर्वसाधारण मनुष्यों के पास वस्त्र और घर होते हैं जिन्हें वे स्वच्छ रखने का प्रयत्न करते हैं परन्तु आपके चक्र यदि खराब होते हैं तो आपको इस पर लज्जा नहीं आती और कुछ समय पश्चात् आपमें उन चक्रों की चेतना की समाप्त हो जाती है। आत्म साक्षात्कार पाने का अर्थ है कि अब आप सूक्ष्म हो गए हैं परन्तु अपनी चेतना में अभी भी आप सूक्ष्म नहीं हैं और जो लोग आत्म साक्षात्कारी नहीं है उनसे भी कहीं अधिक आप बहुत सी व्यर्थ चीज़ों को सच्चा मान लेते हैं ......उदारहण के रूप में आवश्यकता पड़ने पर प्रायः हममें चैतन्य लहरियाँ तक नहीं होतीं या कभी कभी मशीन की तरह से यंत्रवत हम बंधन देने लगते हैं। अतः अभी तक भी आप अपने चक्रों के प्रति चेतन नहीं हैं। अपना मस्तिष्क जब आप इन चक्रों पर डालते हैं तो आप थोड़े से चेतन हो उठते हैं। परन्तु अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर अभी भी आप चेतन नहीं हैं। यही कारण है कि आप ये नहीं समझ पाते कि किस समय विशेष पर आपने कौन सा कार्य करना है। निर्विकल्प अवस्था तक उन्नत हुए बिना आप आगे न बढ़ सकेंगे। उदाहरण के रूप में मैं जो भी करती हूँ उसका मुझे पूरा ज्ञान है। जहाँ भी मैं चाहूँ किसी भी शक्ति को संचालन कर सकती हूँ। मैं यदि चाहूँ तो किसी भी नकारात्मकता को आत्म–सात कर सकती हूँ और यदि न चाहूँ तो ये कार्य नहीं करती। आप चाहे मुझसे हजारों मील दूर हों मैं आप सभी के विषय में जानती हूँ। आपके सांसारिक नाम चाहे मैं न जानती होऊं, परन्तु अपने अस्तित्व के अंग प्रत्यंग के रूप में मैं आपको जानती हूँ। मैं साधारण मानव की तरह से व्यवहार कर सकती हूँ, पूर्णतः आप लोगों की तरह, आप ही की तरह से वृद्ध होना, चश्मा पहनना, और वो सभी कार्य करना जो मुझे हर तरह से मानव दर्शाएं। पूर्ण चेतन अवस्था में, अचेतन अवस्था में नहीं, मैने ये भूमिका स्वीकार की है। मेरे लिए अचेतन कुछ भी नहीं है। अतः यदि आप अपने कार्यों के प्रति चेतन होना चाहते हैं

तो आपको इनके विषय में अत्यन्त सावधान होना होगा। पहली चीज़ जो आपने प्राप्त की है वह है शान्ति परन्तु अब भी मैं पाती हूँ कि जो शान्ति आनन्द बन जानी चाहिए वह झगड़े का रूप धारण कर लेती है। सत्य एक है। सत्य के विषय में आप बहस नहीं कर सकते। यह एकरूप है। एक दूसरे से यह झगड़ा नहीं करना। अपनी उंगलियों के विषय में हम हर समय चेतन नहीं होते परन्तु जब भी हमें कोई चीज़ पकड़नी होती है तो सारी उंगलियाँ इक्ट्ठी हो जाती हैं। अतः मस्तिष्क के भाग भी.........., इसका अचेतन हिस्सा भी चेतन बनाया जाना चाहिए। यही उत्क्रान्ति है। किसी एक धारणा पर अड़े रहना उत्क्रान्ति के विरुद्ध है। सच्चाई पूर्वक कार्य करना आपको सीखना होगा। सर्वसाधारण मानव के लिए, हो सकता है सहजयोगियों के लिए, चमत्कार हों परन्तु मेरे लिए चमत्कार का कोई अर्थ नहीं क्योंकि मैं जानती हूँ कि ये क्या है। अर्धचेतना की स्थिति से ऊपर उठकर आपको देखना होगा कि आप क्या कर रहे हैं। परस्पर सम्बन्धों की पूरी प्रणाली का परिवर्तित होना आवश्यक है। ऐसा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि मानवीय प्रयत्न आपको कहीं नहीं पहुँचा पाते। आपको उत्क्रान्ति प्राप्त करनी होगी। कुछ लोग सहजयोग का अनुचित लाभ उठाते हैं और फिर वे गायब हो जाते हैं। परन्तु अधिकतर लोग जानते हैं कि उन्हें जो प्राप्त हुआ है उसके प्रति उन्होंने चेतन होना है। अतः हम कह सकते हैं कि हमें आत्म–ज्ञान प्राप्त हो गया है परन्तु अभी तक हमें आत्म चेतना प्राप्त नहीं हुई। उदाहरण के रूप में किसी महान सन्त का नाम लेते ही आपमें चैतन्य लहरियाँ बहने लगती हैं। आप ये भी जानते हैं कि क्यों, क्योंकि वह एक महान सन्त हैं। परन्तु आप सहजयोगियों का नाम लेने से चैतन्य–लहरियाँ नहीं बहतीं। आपका नाम लिए जाने पर चैतन्य लहरियाँ क्यों नहीं बहने लगती ? और आपको तो एक विशेष लाभ भी प्राप्त है क्योंकि आदिशक्ति आपके साथ–साथ है, आपके सम्मुख हैं। ये सब चीज़ें उन्हें बताने के लिए कोई न था परन्तु आप तो इस कृपा को अपना अधिकार मान बैठे हैं !

अभिव्यक्ति करते हुए जब हम कुछ कहते हैं तो क्या हम स्वाभाविक हैं अर्थात् क्या हम हृदय से वो बात कह रहें हैं ? मैं चाहती हूँ कि आप यह चेतना प्राप्त करें कि ' मैं यह कार्य हृदय से कर रहा हूँ।' सहजयोग में कुछ ऐसे लोग हैं जो बहुत परिश्रम करते हैं और कुछ लोगों ने इसे अधिकार मान लिया है। वो सहजयोग में कोई मदद नहीं करना चाहते, हर चीज़ उन्हें बनी बनाई चाहिए। उनका ये आचरण दर्शाता है कि वे आनन्द प्राप्ति की अपनी शक्तियों के प्रति चेतन नहीं हैं। अपने हृदय से यदि वे कार्य करेंगे तो कभी भी उन्हें अपने प्रयत्न और उपलब्धि का एहसास न होगा।

संतोष का एहसास (Sense of fulfilment) सारी समस्याओं को दूर कर देगा। विशेष रूप से बाई विशुद्धि की समस्याओं को।

दूसरी अवस्था वह होगी जब आप किसी भी कार्य को करते हुए उसके विषय में चेतन होंगे, उसमें कोई गलती न होगी। कहीं जब आपको लगेगा कि गलती कर दी है तो वह भी ठीक साबित होगी। उदाहरण के रूप में अपनी घड़ी का समय ठीक करने के लिए आज मैंने उसका पेच बाहर को खींचा। ये कार्य मैंने अंजाने में किया फिर भी चेतन अवस्था में किया क्योंकि घड़ी तो रुक गई पर मैं जानती थी कि यहाँ किस वक्त पहुँचना है। अतः जानबूझकर मैंने स्वयं को स्वयं के विरुद्ध कर लिया। यदि घड़ी बंद न हुई होती तो मैं यहाँ पर

समय से पहले पहुँच जाती, परन्तु वह मेरे आने का समय न होता। इसलिए घड़ी को बन्द रखने के लिए मुझे उसका पेच खींचना पड़ा। तो जो भी शरारत आप करें, आपको उसकी समझ हो और तब आप ये शरारत अपने ही साथ कर सकते हैं और फिर इसका नाटक भी बना सकते हैं। परन्तु ऐसी स्थिति अभी बहुत दूर है। जिस अवस्था में अब हम हैं उसमें हम बहुत सी गलतियाँ करते हैं क्योंकि हम आत्मा के प्रति चेतन नहीं होते।

परन्तु उत्थान के मामले में क्या हम सावधान होते हैं या इसे हम अधिकार मान लेते हैं कि श्रीमाताजी हमें उस स्थिति तक ले जाएंगी ? ऐसा करना बचकानापन है। अपने उत्थान के मामले में आपको परिपक्व होना है। प्रतिदिन अपना सामना करें। वास्तव में देखें कि दुनियावी चिन्ताओं में आप कितना समय खर्च करते हैं और अपने उत्थान को कितना समय देते हैं। क्या आपने सभी कुछ, अपनी सभी चिन्ताएं सर्वशक्तिमान परमात्मा पर छोड़ दी हैं ? क्या आप अपने पूर्वबंधनों से पूरी तरह मुक्त हो गए हैं, सभी मूर्खताओं को त्यागकर क्या आप पूरी तरह बाहर निकल आए हैं ? ये भी देखें कि मैं किस प्रकार से अन्य सहजयोगियों से बात करता हूँ और किस प्रकार उनसे सम्बंधित हूँ।

ये देखकर मुझे हैरानी होती है कि कोई भी व्यक्ति जो सहजयोगी नहीं है सहजयोगी पर आक्रमण करे तो सहजयोगियों का समूह उस बाहरी व्यक्ति का पक्ष लेता है। कई बार सहजयोगी अच्छे लोगों की अपेक्षा नकारात्मक लोगों पर अधिक ध्यान देते हैं। आपको सकारात्मक लोगों के साथ जुड़े रहना चाहिए। उनमें यह बहुत सूक्ष्म अहं है। परन्तु बिगड़े हुए कम्प्यूटर की तरह से अपने जटिल मस्तिष्क से आप मेरी कही हुई बात का गलत अर्थ समझते हैं। जैसे मैं कहती हूँ कि अपने भूतकाल को भूल जाइए। इसका अर्थ ये नहीं है कि आप भूतकाल की सभी अच्छाइयों को भी भूल जाएं। भूतकाल को भूल जाने का अभिप्राय ये है कि बीता हुआ समय आप पर काबू न पा ले। प्रेम से परिपूर्ण सहज और सीधा मस्तिष्क मेरी बात को ठीक प्रकार से समझ सकता है। इस जटिल मस्तिष्क का ठीक किया जाना आवश्यक है और इसका सर्वोत्तम उपाय ये है कि आप सोचना बन्द कर दें। सोचना बन्द करके आपको लगता है कि आप कोई कार्य न कर सकेंगे। उदाहरण के रूप में मेरे दिए हुए प्रवचन के विषय में भी आप केवल सोचते रहते हैं। इसमें से क्या आप मेरी सोच को सुन सकते हैं ? इन बत्तियों के बारे में सोचने से इनमें प्रकाश नहीं आ सकता। सोचते रहना आलसी व्यक्ति का पहनावा है जो काम से बचने के लिए पहना जाता है। ये चालाकी है, पलायन है। सहजयोग के विषय में बहस मुबाहिसा न करें। अपने अगुआओं से बहस न करें, चाहे आप उसकी पत्नी हों फिर भी उससे बहस न करें। सहजयोग में पत्नियाँ अपने पतियों को किसी भी मामलें पर प्रभावित करने का प्रयत्न न करें। इसमें उनका कुछ लेना-देना नहीं। ऐसे मामले में पत्नियों को चाहिए कि अपने हार्दिक प्रेम से, मस्तिष्क से नहीं, संस्था तथा अपने पतियों का पोषण करें। मैं सोचती हूँ कि स्त्री रूप में अवतरित होना मेरे लिए बहुत महान बात है क्योंकि इस रूप में मैं अपने हृदय, प्रेम की भावनाओं, उनकी कार्य-शैली तथा अपने प्रेम की लीला का आनन्द लेती हूँ। ये इतनी महान चीज़ है कि कोई अन्य अवतरण इस प्रकार से आनन्द नहीं ले सका जैसे मैं ले सकी। महिलाओं को यदि हृदय की देख-भाल करनी पड़े तो उन्हें स्वयं को अपमानित नहीं महसूस करना चाहिए। एक प्रकार से वे अत्यन्त उच्च्य स्थिति में हैं क्योंकि

इस प्रकार वे बिना सोचे कार्य कर सकती हैं, हृदय के बिना तो कार्य किया ही नहीं जा सकता। व्यक्ति को बहस नहीं करनी चाहिए। स्त्रियाँ यदि बहुत अधिक बहस करने वाली हों तो पुरुष बहरे हो जाते हैं। महिलाओं की बात को वो सुनते ही नहीं। महिलाएं यदि बहुत अधिक आक्रामक हों तो पुरुष बिल्कुल मौन हो जाते हैं। अतः आप लोगों को इस प्रकार बर्ताव करना चाहिए कि पुरुष पुरुष हों और महिलाएं महिलाएं। आपको चाहिए कि पूर्ण पुरुष या पूर्ण महिला बनें। तब आप मजा ले पाएंगे।

अपनी चेतना में हमें चेतन होना है कि कहाँ तक हमने अपने पारस्परिक सम्बन्धों की चेतना प्राप्त की है अर्थात् विराट की सामूहिक चेतना, मस्तिष्क यानि सहस्रार की सामूहिक चेतना। सैद्धान्तिक रूप से सहस्रार विष्णु तत्व है परन्तु वहाँ पर शासक देवता श्री माताजी निर्मला देवी हैं। तो आप घटित हुए इस सुन्दर सामंजस्य को देख सकते हैं। विष्णु की सभी शक्तियों को शासक देवी के अनुरूप,उनके चरण कमलों पर, उनके अनुसार कार्य करना पड़ता है। अतः श्री विष्णु की चेतना पूर्णतः शासक देवी के हाथ में है। जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे घटित होने दें। अपने सहस्रार इस देवी को समर्पित करें। देवी क्योंकि आपके बीच में है इसलिए ऐसा कर पाना बहुत आसान है। आपके अपने सहस्रार हैं और इस आधुनिक युग में आप सहजयोगियों ने ही इस देवी को देखा है।

सालोक्यं – परमात्मा के दर्शन।
सामीप्यं – परमात्मा का सामीप्य।
सानिध्यं – परमात्मा का साथ।

परन्तु आपको तो **तादात्म्यं अर्थात् परमात्मा की एकरूपता** भी प्राप्त हो गई है, यह किसी भी योगी सन्त या पैगम्बर की धारणा नहीं है। आपको ये तादात्म्यं मेरे शरीर से बाहर रहते हुए प्राप्त हो गया है। जबकि संतों पैगम्बरों और योगियों को तादात्म्य मृत्यु पश्चात् मेरे शरीर के अन्दर आने पर प्राप्त हुआ।

अतः समय सीमा को समझें, अपनी महानता को समझे और इस बात को भी कि सृष्टि के इस उच्चतम कार्य को करने के लिए किस प्रकार आप लोगों को चुना गया है। आलस्य के लिए अब कोई समय शेष नहीं रहा। आपको उठना होगा, जागना होगा। आज वो दिन है जब मुझे आशा है कि आप निर्विकल्प में छलांग लगाएंगे। लेकिन प्रयत्न द्वारा ही आप वहाँ रुक पाएंगे अन्यथा पुनः आप नीचे की ओर फिसल जाएंगे। इस प्रवचन को बार–बार सुनें (पढ़ें), इसके विषय में सोचें। अपने बारे में आपको ज्ञान होना चाहिए कि प्रतिदिन आप कितना आगे बढ़ रहे हैं।

आज सहस्रार का विशेष दिन है। पूजा कल होनी चाहिए थी परन्तु हम आज पूजा कर रहे हैं। अतः हमें समझना है कि परमात्मा के पांचांग का मानव के पांचांग से कुछ लेना देना नहीं। कुछ पांचांगों के अनुसार मुझे दो हजार वर्ष बाद अवतरित होना चाहिए था और कुछ मानते हैं कि इस रूप में मुझे दो हजार वर्ष पूर्व आना चाहिए था। तो पांचांग अपनी जगह ठीक हैं।

आप लोग न तो रोबोट हैं न ही मशीनें। विकास प्रणाली के माध्यम से आप विकसित हुए हैं और विकास प्रणाली के माध्यम से ही आपने श्रेष्ठतम उपलब्धि प्राप्त करनी है। आप ही ने परिणाम दिखाने हैं मैं जितना चाहे आपके सहस्रार को प्रकाशित कर दूँ परन्तु पुनः यह लड़खड़ा जाएगा। अतः आपको समझना है कि जिन बुलंदियों पर आपको लाया गया है उन्हें आप ही ने अपनी पूर्ण शक्ति और क्रियाशीलता द्वारा बनाए रखना है।

ये प्रवचन आपकी माँ की चिन्ता है। इस बात को आप समझ सकते हैं परन्तु यह आपकी चेतना बन जाना चाहिए। यदि आप इसे वहाँ (सहस्रार) बनाए रखें तो ऐसा हो सकता है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

महाकाली पूजा
लोनावाला 19. दिसम्बर, 82
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

योग के इस महान देश में आप सब सहज–योगियों का स्वागत है। आज सर्वप्रथम अपने अन्तस में हमें अपनी इस इच्छा को स्थापित करना है कि हम साधक हैं। तथा हमें पूर्ण उत्क्रान्ति एवं परिपक्वता प्राप्त करनी है। आज की पूजा पूरे ब्रह्माण्ड के लिए है। इस इच्छा से पूरा ब्रह्माण्ड का ज्योतिर्मय होना चाहिए। आपकी इच्छा इतनी गहन होनी चाहिए कि इससे आत्मा प्राप्ति की शुद्ध इच्छा, महाकाली शक्ति से निकलने वाली पावन चैतन्य–लहरियाँ बहनी चाहिएं। यही सच्ची इच्छा है। बाकी सभी इच्छाएं मृगतृष्णा सम हैं।

आप लोग विशेषरूप से परमात्मा द्वारा चुने गए हैं, सर्वप्रथम इस इच्छा की अभिव्यक्ति करने के लिए और फिर पावनता की इस गहन इच्छा को प्राप्त करने के लिए परमात्मा ने आप लोगों को विशेष रूप से चुना है। आपने पूरे विश्व को पावन करना है, केवल साधकों को ही नहीं उन लोगों को भी जो साधक नहीं हैं। इस पूरे ब्रह्माण्ड के चहुँ ओर आपने अन्तिम लक्ष्य, आत्मा–प्राप्ति की इच्छा, के परिमल (Aura) का सृजन करना है।

इच्छा के बिना इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व ही नहीं होता। आदिशक्ति (The Holy Ghost) ही परमात्मा की इच्छा हैं। वे सर्वव्याप्त शक्ति हैं, वही हमारे अंतःस्थित कुण्डलिनी हैं। कुण्डलिनी की केवल एकमात्र इच्छा है– ये है आत्मा बनना। किसी अन्य चीज़ की यदि आप इच्छा करें तो कुण्डलिनी नहीं उठती। जब इसे पता लग जाता है कि सामने बैठे साधक के माध्यम से ये इच्छा पूर्ण होने वाली है तभी ये जागृत होती हैं। आपमें यदि इच्छा न हो तो कोई इसे जगा नहीं सकता। सहजयोगी को कभी अपनी इच्छा अन्य लोगों पर नहीं थोपनी चाहिए।

आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् पहली बाधा जो आपके सम्मुख आती है वो ये है कि आप अपने परिवार के विषय में सोचने लगते हैं, "कि मेरी माँ को जागृति नहीं प्राप्त हुई, मेरे पिताजी को जागृति नहीं हुई, मेरी पत्नी को जागृति नहीं हुई, मेरे बच्चों को जागृति नहीं हुई।" आपको ये समझ लेना चाहिए कि ये सारे सम्बन्ध सांसारिक हैं। संस्कृत भाषा में इन्हें 'लौकिक' कहा जाता है, ये अलौकिक नहीं हैं, ये सांसारिक सम्बन्धों से परे नहीं हैं। सांसारिक सम्बन्ध हैं। सारे मोह सांसारिक हैं। इस सांसारिक माया में यदि आप फँसे रहे, क्योंकि आप जानते हैं कि महामाया शक्ति आपको ऐसा खिलवाड़ करने देती हैं, तो आप इसमें किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। लोग मेरे पास अपने सम्बंधियों माता–पिता आदि को लेकर आते हैं और अन्ततः उन्हें पता चलता है कि उन्होंने ऐसा करके बहुत गलत किया। उन लोगों ने अपने जीवन के बहुत से दिन उन लोगों पर बर्बाद कर दिए जिनमें श्रीमाताजी का चित्त प्राप्त करने की बिल्कुल भी योग्यता नहीं है।

इस बात को आप जितना जल्दी महसूस कर लें उतना अच्छा है कि इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आपमें तो यह इच्छा है परन्तु आपके इन तथाकथित सांसारिक सम्बंधियों में नहीं है। ईसा–मसीह को जब कहा गया कि उनके भाई–बहन बाहर प्रतीक्षा कर रहें हैं तो उन्होंने कहा, " कौन मेरे भाई और कौन मेरी बहनें" ? अतः व्यक्ति को ये बात महसूस करनी है कि जो लोग हर समय अपनी पारिवारिक समस्याओं में फँसे रहते हैं और मेरा ध्यानाकर्षण भी करना चाहते हैं तो आप जान लें कि मैं उनके साथ केवल खिलवाड़ कर रही हूँ। आपके लिए ये चीज़ें मूल्यहीन हैं। उत्थान के लिए पहली आवश्यकता ये है कि आप कोई इच्छा न

करें। अपने सगे–संबंधियों में शुद्ध इच्छा को न खोजें। महाकाली शक्ति की स्थापना का यह पहला सिद्धांत है। भारत में, जहाँ लोग विशेष रूप से अपने परिवारों में फँसे हुए हैं, यह बहुत बड़ी समस्या है। आप यदि एक व्यक्ति को आत्म–साक्षात्कार देते हैं तो यह देखकर हैरान हो जाते हैं कि उसके सभी सगे–सम्बंधी तो भूतों की एक बहुत बड़ी टोली है। एक व्यक्ति को आत्म–साक्षात्कार देकर आप मुसीबत में फँस जाते हैं। मुझे सताने के लिए, मेरी शक्ति का ह्रास करने के लिए धीरे–धीरे ये सभी भूत घुसते चले आते हैं। और ये किसी काम के नहीं। यह समझने के लिए कि ऐसा होना शुभ नहीं है, आपके साथ भी यह चीज़ घटित होनी चाहिए। आप यदि अपना समय बरबाद करना चाहते हैं तो मैं आपको आपका समय बर्बाद करने की आज्ञा दूँगी। परन्तु यदि आप तीव्रता से उत्क्रान्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम व्यक्ति को याद रखना है कि ये सम्बंध तो पूर्णतः सांसारिक हैं और ये आपकी शुद्ध इच्छा नहीं हैं।

अतः अपनी शुद्ध इच्छा को सांसारिक इच्छा से अलग करें। इसका ये अर्थ बिल्कुल भी नहीं है कि आप अपना परिवार त्याग दें, अपनी माँ को त्याग दें या बहन को त्याग दें। कुछ भी नहीं। साक्षी रूप से उन्हें देखें, उसी तरह से जैसे आप किसी अन्य व्यक्ति को देखते हैं और स्वयं परखें कि क्या वास्तव में उनमें उत्क्रान्ति प्राप्त करने की इच्छा है या नहीं। उनमें यदि इच्छा है तो बहुत अच्छी बात है, उन्हें इसलिए अयोग्य नहीं ठहराया जाना चाहिए क्योंकि वे आपके सम्बंधी हैं। ये बात दोनों तरह से है– आपके सम्बंधी होने के नाते उन्हें उत्क्रान्ति के योग्य भी नहीं ठहराया जा सकता और न ही उन्हें इस कारण से अयोग्य ठहराया जा सकता है। सहजयोग में आपको अपनी इच्छा शुद्ध इच्छा बना लेनी चाहिए। आपको बहुत सी चीज़ों में से निकलना होगा, परन्तु जो लोग अपने परिवारों के मोह में फँसे हैं, उनसे बंधे हुए हैं उन्हें ये देखना होगा कि कहीं वे सहजयोग को अपने किसी सम्बंधी पर थोप तो नहीं रहे हैं। कम से कम उन्हें मुझ पर तो बिल्कुल न थोपें।

अब हमारे अन्दर ये इच्छा, जो कि महाकाली शक्ति है और जो अभिव्यक्त हो रही है, बहुत सी विधियों से हमारे पास आती है। जैसा मैने आपको बताया आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् सहजयोगियों में यह अपने सम्बंधियों के लिए कुछ करने की इच्छा के रूप में आती है। हममें दूसरी इच्छा ये होती है कि अपने बीमार सम्बंधियों को ठीक करने का प्रयत्न करें।यह दूसरी इच्छा है। आप अपने अन्दर देखें तो आप पाएंगे कि आपमें से बहुत से लोगों को यह इच्छा हुई। अतः कुष्ठ रोग से लेकर के सर्दी, छींकें आदि छोटी–छोटी बीमारियों को लेकर भी वो सोचते हैं कि अपने सम्बंधियों को श्रीमाताजी के पास ले जाएं। अपने परिवार की सारी चिन्ताओं को मेरे सम्मुख लाना चाहते हैं। ऐसी छोटी–छोटी चीज़ों को भी जैसे गर्भ या छींकें आदि जो कि अत्यन्त स्वाभाविक हैं, फिर भी उन्हें वे मेरे चित्त में डालना चाहते हैं। मैं कहती हूँ, 'ऐसा करते रहो, अगर सम्भव है तो इस प्रकार इनका समाधान करने का प्रयत्न करो !' परन्तु आपका चित्त यदि ऐसे सम्बंधियों में नहीं उलझा होगा तभी लोग मेरे चित्त में होंगे। आप उन्हें मेरे चित्त में छोड़ दें। मैं इसका समाधान करूंगी। परन्तु यह कुचक्र (Vicious Circle) है। यह उस मस्तिष्क का प्रक्षेपण है जो सोचता है कि ठीक है, "श्रीमाताजी यह चीज़ हमारे चित्त में नहीं है। आप कृपया इसे देखें।" परन्तु इसका यह तरीका नहीं है। हमारे

अन्दर केवल एक गहन इच्छा होनी चाहिए कि क्या मैं स्वयं आत्मा बन गया हूँ ? क्या मैंने अपना अन्तिम लक्ष्य प्राप्त कर लिया है ? क्या मैं सांसारिक इच्छाओं से ऊपर उठ गया हूँ ? स्वयं को स्वच्छ करें। एक बार जब आप स्वयं को स्वच्छ करने लगते हैं तब यदि कोई कमी रह जाती है तो मैं उसे दूर करती हूँ। यह मात्र एक आश्वासन है, उत्तरदायित्व (Guaranty) नहीं। समस्या यदि मेरे चित्त के काबिल है तो मैं अवश्य इस पर ध्यान दूंगी। आपको भी अपने चित्त का मूल्य वैसे ही समझना चाहिए जैसे मैं समझती हूँ। मेरे विचार से आपको तो मुझसे भी अधिक अपने चित्त के मूल्य को समझना चाहिए क्योंकि मैं तो अपने अन्दर ही हर चीज का संचालन कर सकती हूँ क्योंकि हर चीज़ मेरे चित्त में है।

परन्तु आप अपनी इच्छाओं को, आपकी ओर मुँहबाए खड़ी सभी सांसारिक इच्छाओं से दूर करके स्वच्छ करने का प्रयत्न करें। इसे विशाल स्तर पर जब आप देखते हैं तो सोचते हैं, " श्रीमाताजी देश की समस्याओं का क्या करें " ? ठीक है, अपने देश का मानचित्र मुझे दे दें। समाप्त, इतना काफी है। तब स्वयं को स्वच्छ करें– आपमें जो भी इच्छा है उसे छोड़ दें। एक बार जब आप पावन हो जाएंगे तो वह क्षेत्र आपके चित्त की सीमा में आ जाएगा। ये बात बहुत दिलचस्प है। जब आप इस पर काबू पा लेते हैं केवल तभी इस पर प्रकाश डाल सकते हैं। परन्तु यदि आप इसके अन्दर हैं तो आपका प्रकाश छुपा हुआ है। प्रकाश बाहर को प्रसारित नहीं हो रहा।

आपको इस इच्छा से ऊपर उठना होगा। जब भी आपमें कोई इच्छा जागृत हो आप तब तक इससे ऊपर उठे रहें जब तक आपके सम्मुख खड़ी उस समस्या पर आपका प्रकाश नहीं पड़ने लगता। और सुलझना चाहिए। ये सारी चिन्ताएं जो आप अपने ऊपर ले रहे हैं ये मेरी सिरदर्दियां हैं। आपको तो केवल एक कार्य करना है– आपको आत्मा बनना है। मात्र इतना ही। ये बड़ा आसान कार्य है– बाकी सब मेरा सिरदर्द है।

आपकी इच्छा को सामूहिकता पर ले जाने वाली समस्या अत्यन्त भिन्न होनी चाहिए। अपनी पावनता का पोषण करने के लिए, अपनी पावनता से सुगंधित होने के लिए आपका चित्त दूसरी ओर होना चाहिए। अब आप मेरा सामना नहीं कर रहे, मेरे साथ मिल कर पूरे विश्व का सामना कर रहे हैं। इस बात को समझें, पूरा दृष्टि कोण ही परिवर्तित हो जाएगा। दृष्टिकोण ऐसा होना चाहिए :– मैं क्या दे सकता हूँ ? मैं किस प्रकार दे सकता हूँ ? देने में क्या गलती है ? मुझे और अधिक सावधान रहना होगा, मेरा चित्त कहाँ है ? मुझे अपने प्रति अधिक सावधान होना होगा। मैं क्या कर रहा हूँ ? मेरी जिम्मेदारी क्या है ? आपमें पावनता प्राप्त करने की इच्छा का होना आवश्यक है। आपको शुद्ध इच्छा होनी चाहिए। अर्थात् आपको आत्मा बन जाना चाहिए। परन्तु अपने प्रति आपकी जिम्मेदारी क्या है ? आपको इच्छा करनी चाहिए कि अपने प्रति आपकी जिम्मेदारी की अभिव्यक्ति हो और वो पूर्ण हो।

इसके बाद सहजयोग के प्रति आपकी जिम्मेदारी आती है। जो कि परमात्मा का कार्य है और जो शुरु हो चुका है। उसके प्रति आपकी क्या जिम्मेदारी हैं। आप लोग ही मेरे हाथ हैं आप लोगों ने ही परमात्मा का कार्य करना है और परमात्मा विरोधी तत्वों से युद्ध करना है– आसुरी तत्वों से। अब आप अपने परिवार के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। जो लोग अब भी परिवार के लिए जिम्मेदार हैं वे आधे–अधूरे सहजयोगी हैं– मैं कहती हूँ वे बेकार

हैं, बिल्कुल किसी काम के नहीं। ऐसे सब लोग छुट जाएंगे, उनके परिवारों को कष्ट उठाना पड़ेगा और मैं जानती हूँ कि ये घटित होगा क्योंकि अब इस प्रकार से शक्तियाँ एकत्र हो रही हैं कि छटनी आरम्भ हो जाएगी।

आत्मा बनना आपकी जिम्मेदारी है, सहजयोग आपकी जिम्मेदारी है, मुझे बेहतर, बेहतर, और बेहतर समझना आपकी जिम्मेदारी है। अपने अंदर स्थापित तंत्र को समझना आपकी जिम्मेदारी है। किस प्रकार ये तंत्र कार्य करता है, और आचरण करता है ये समझना आपकी जिम्मेदारी है। स्वयं किस प्रकार गुरु बनना है ये जानना आपकी जिम्मेदारी है। गरिमामय और सम्मानमय बनना आपकी ज़िम्मेदारी है। सम्मानमय व्यक्तित्व बनना घटिया व्यक्तित्व का नहीं। आप यदि बुलंदियां प्राप्त करना चाहें तो आपमें से हरेक का मूल्य पूरे ब्रह्माण्ड जितना है। ब्रह्माण्डों के ब्रह्माण्ड आपके चरणों में न्योछावर किए जा सकते हैं बशर्ते कि आप बुलंदियों तक उन्नत होना चाहें और अपने अन्दर स्थित विशालता का पोषण करना चाहें।

जो लोग अब भी अपने को निम्न स्तर पर रखना चाहते हैं वो कभी उन्नत नहीं हो सकते। उदाहरण के रूप में पश्चिमी सहजयोगियों को माँ के विरुद्ध पाप करने की समस्या है और पूर्व के सहजयोगियों को पिता के विरुद्ध अपराध करने की समस्या है। इससे मुक्त होना आपके लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं है। चित्त को शुद्ध रखना है। सहजयोग में आप सारे तरीके जानते हैं। जिनसे चित्त को पावन किया जा सकता है चित्त यदि पावन नहीं होगा तो सभी तुच्छ मूर्खता पूर्ण तथा उत्क्रान्ति की दृष्टि से अर्थहीन चीज़ें हर समय इस इच्छा पर आक्रमण करती रहेंगी। अच्छा सहजयोगी अपने कपड़ों की, लोगों के आचरण और उनकी बातों की चिन्ता नहीं करता। उसका चित्त आलोचना पर नहीं होता कि फलां व्यक्ति ऐसा है और फलां ऐसा। न ही उसका चित्त किसी अन्य की आक्रामकता पर होता है क्योंकि अन्य तो कोई है ही नहीं। परन्तु समस्या ये है कि जब मैं बताती हूँ तो लोग समझते हैं कि मैं किसी अन्य को कह रही हूँ। कोई ये नहीं सोचता कि मैं उसी के विषय में ये बात कह रही हूँ। जो लोग आक्रामक नहीं हैं वो दूसरे ढंग से सोचते हैं। मैं यदि किसी आक्रामक व्यक्ति के बारे में कहूँ तो जो व्यक्ति आक्रामक नहीं हैं वो तुरन्त आक्रामक व्यक्ति के बारे में सोचेगा अपने बारे में नहीं। तुरन्त आप अपना मस्तिष्क दूसरे लोगों पर ले जाते हैं और उनके दोष खोजने लगते हैं। अतः इस पर पड़े हुए दबाव के कारण ये इच्छा शनैः शनैः निम्न से निम्नतर हो जाती है।

अतः सावधानी अत्यन्त आवश्यक है। पूर्ण सावधानी। सतर्कता कि हमें अपना चित्त केवल अपनी शुद्ध इच्छा के पोषण के लिए रखना चाहिए। इच्छा हृदय से आती है और आपको इस प्रकार से बनाया गया है कि इसके बिना आपका ब्रह्मरन्ध्र ही स्वच्छ न होगा। कुछ लोग सहजयोग की प्रशंसा के पुल बाँधने को ही बहुत बड़ी बात समझ लेते हैं। परन्तु उनके हृदय यदि खुले नहीं हैं तो वे स्वयं को धोखा दे रहे हैं। अतः अपने हृदय को खुला रखने का प्रयत्न करें।

मुझे आशा है कि आज जब आप ये पूजा करेंगे, महाकाली की पूजा करेंगे तथा यह विशेष यज्ञ करेंगे तो निश्चित रूप से हम यह परिमल (Aura) स्थापित कर लेंगे और पूरे विश्व को ज्योतिर्मय बना देंगे। परन्तु आपका दृष्टिकोण ये होना चाहिए कि मैंने इसके लिए क्या योगदान दिया ? क्या अब भी मैं अन्य लोगों के बारे में सोच रहा हूँ ? क्या अब भी मैं छोटी–छोटी समस्याओं के विषय में सोच रहा

हूँ या अपनी आत्मा के विषय में ?

तो बायाँ पक्ष श्री गणेश से शुरु होता है और उन्हीं पर समाप्त होता है। श्रीगणेश जी में मूलतः एक ही गुण है कि वे पूर्णतः अपनी माँ के प्रति समर्पित हैं। किसी अन्य परमात्मा को वो नहीं पहचानते। यहाँ तक कि वो अपने पिता को भी नहीं पहचानते। वो तो केवल अपनी माँ को जानते हैं और उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। परन्तु ये शुद्ध इच्छा गतिशील होनी चाहिए। इस गतिशीलता के बारे में मैं आगे होने वाली बहुत सी पूजाओं में बताऊँगी। परन्तु आज हमें चाहिए कि स्वयं को आत्मा बनने की शुद्ध इच्छा में स्थापित कर लें।

अब पाश्चात्य मस्तिष्क प्रश्न करेगा, कैसे ? ये बात हमेशा उठती है कि किस प्रकार ये कार्य करें ? क्या मैं आपको बता दूँ कि यह बहुत सहज है। आदिशंकराचार्य ने विवेक चूड़ामणि तथा अन्य बहुत सी पुस्तकें और ग्रन्थ लिख डाले और सारे बुद्धिवादी लोग उनकी जान के दुश्मन बन गए। कहने लगे, " इसमें ऐसा लिखो, वैसा लिखो। आदिशंकराचार्य ने इन सब लोगों को भुलाकर सौन्दर्य लहरी लिखी जो केवल माँ का वर्णन है और माँ के प्रति उनके समर्पण है। सौन्दर्यलहरी में लिखा गया हर श्लोक एक मंत्र है यह मस्तिष्क के माध्यम से मस्तिष्क का समर्पण नहीं है। यह तो उनके हृदय का समर्पण है। यह आपके हृदय का पूर्ण समर्पण है। पश्चिमी सहजयोगी भली भांति जानते हैं कि किस प्रकार उन पर बार–बार नकारात्मकता के आक्रमण हुए, विशेष रूप से जब फ्रायड जैसे भयानक लोग उनके आधार को, उनकी जड़ों को नष्ट करने के लिए आए और किस प्रकार से पश्चिम ने आँखे बंद करके उसे स्वीकार किया और स्वयं को नर्क के मार्ग पर डाल दिया। ये सारी चीज़ें बाहर निकालनी आवश्यक हैं। ये सब मूर्खता है, पूर्णतः गलत है और परमात्मा विरोधी गतिविधियाँ हैं। ये एहसास होने पर आप इनका डटकर मुकाबला करेंगे, कहेंगे कि यह तो हमारे मूल का, हमारी जड़ों का विनाश है। जब हमारी माँ सारी उत्कृष्ट चीज़ों का, श्रेष्ठ चीज़ों का, पोषण करने वाले तत्वों का, उत्क्रांति और मुक्ति की ओर ले जाने वाले तत्वों का स्रोत है तो ये लोग (फ्रॉयड आदि) तो हमें हमारी जड़ों से काट से रहे हैं। मैं सोचती हूँ कि आप लोगों के साथ ऐसे व्यवहार किया गया है मानो आप पशु हों ! वो चाहते हैं कि हम सब मानवता के निकृष्टतम स्तर पर आ जाएं जैसे हम भयानक रोगी हों। ये बात मेरी समझ में नहीं आती ! अतः आप पर हुए उन सारे आक्रमणों को समझ लेना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है। सावधान रहें कि इस प्रकार के लोगों के झाँसे में न आ जाएं।

अंत में मैं ये कहूँगी कि इस देश में आप लोग जड़ों को देखने के लिए आए हैं कोपलों को देखने के लिए नहीं। पाश्चात्य शैली का अपना दृष्टिकोण परिवर्तित करें। यहाँ पर टेलिफोन खराब हैं आप कोई टेलिफोन नहीं कर सकते। यहाँ की डाक प्रणाली भयानक है। रेलवे भी बदतर है (मुझे ये बात नहीं कहनी चाहिए क्योंकि हम रेलवे के बंगले में रुके हुए हैं) परन्तु यहाँ के लोग शानदार हैं। वो जानते हैं कि धर्म क्या है । किसी भी तरह से समझ लीजिए वो आक्रमण से बचे हुए हैं क्योंकि कुण्डलिनी होने के कारण यहाँ श्रीगणेश बैठे हुए हैं। कैसे कोई इस महाराष्ट्र पर आक्रमण करने की हिम्मत कर सकता है ? यहाँ तो रक्षा करने के लिए आठ गणेश बैठे हुए हैं। मैं नहीं जानती कि महाराष्ट्र के लोग भी इस बात को जानते हैं या नहीं। बहुत से मारुति भी यहाँ विराजमान हैं। अतः इस देश पर कौन आक्रमण कर सकता है ? यहाँ पर कोई अन्य

नकारात्मक आक्रमण नहीं है सिवाय इसके कि लोग स्वयं कुछ धन–लोलुप हैं। केवल ये अभिशाप उन पर है, इससे वे यदि मुक्ति पा लें तो वे महान लोग हैं।

अतः आप लोग इस देश में पश्चिम की सुख सुविधा प्राप्त करने के लिए नहीं आए। आत्मा का सुख पाने के लिए आए हैं। अतः भारत के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें। मैं किसी भी प्रकार से ये नहीं कह रही कि एयर इण्डिया के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें। ये बिल्कुल गलत धारणा है कि सहजयोगी होने के नाते आपको केवल एयरइण्डिया से ही यात्रा करनी है। बिल्कुल भी नहीं। सहजयोग को एयरइण्डिया से कुछ नहीं लेना–देना। हमारे रेलवे, तथा अन्य सभी चीज़ों का सहजयोग से कोई सरोकार नहीं । तो क्या ? अतः देश भक्त बनें और परमात्मा के लिए अपनी ही एयरलाइन का उपयोग करें। आप जब यहाँ पहुँचेंगे तो पाएंगे कि यहाँ के लोग अत्यन्त अबोध हैं। वे फायड को नहीं समझ सकते। इस विषय पर तो हम उनसे बात भी नहीं कर सकते। ये बात उनसे परे है। इस मामलें में वे ऊँचे प्रकार के लोग हैं क्योंकि उन पर आक्रमण नहीं हुआ। परन्तु आप लोग भी एक प्रकार से बहुत ऊँचे है क्योंकि आप पर आक्रमण हुआ फिर भी आप इसमें से निकल आए। मुख मोड़ने मात्र से आप दूसरी ओर आ गए हैं। ये भी महान बात है।

अतः आपको इस बात का भी भरोसा हो जाएगा कि और भी बहुत से लोग हैं जो आप की तरह से विश्वास करते हैं। विशाल जनसंख्या वाले इस देश में आपको आश्रय देने वाले बहुत से लोग हैं। अतः स्वयं को खोया हुआ न समझें।

आज हम महाकाली तत्व की पूजा से आरम्भ करेंगे। आप कह सकते हैं आज गणेश गौरी का दिन है। पांचांग के अनुसार हो सकता है कि ऐसा न हो परन्तु मेरे अनुसार ऐसा ही है। आइए अपने सूक्ष्म स्तर पर अपने अन्दर पावन होने की इच्छा, सभी बाधाओं और अपने अन्दर की सभी अस्वच्छ चीज़ों से मुक्ति पाने की इच्छा को स्थापित कर लें।

महान सहजयोगी बनने की इच्छा को, जिम्मेदार सहजयोगी बनने की इच्छा को, माँ के प्रति समर्पित होने की इच्छा को।

ऐसा करना कठिन नहीं है। ये अहम् है। अन्त में जाने वाली विकृति, क्योंकि आप क्या समर्पण करते हैं ? मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। सिवाए इसके कि आप मेरा प्रेम स्वीकार कर लें। समर्पण का अर्थ केवल इतना है कि मेरा प्रेम स्वीकार करने के लिए आप अपने हृदय खोल लें। इस अहम् को त्याग दें। केवल इतना ही, और यह कार्यान्वित हो जाएगा। मैं स्वयं को आपके हृदय में बिठाने का प्रयत्न कर रही हूँ और निश्चित रूप से मैं वहाँ स्थापित हो जाऊंगी।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(निर्मला योग से उद्धृत एवं अनुवादित)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का एक पत्र
(मराठी से अनुवादित)
19 दिसंबर 1982

प्रिय मोदी एवं अन्य सहजयोगियो,

अनन्त आशीर्वाद,

आपका पत्र पाकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपकी ईड़ा नाड़ी स्वच्छ हो गई है और मुझे आशा है कि सभी लोगों की ईड़ा नाड़ियाँ, कम से कम कुछ सीमा तक स्वच्छ हो गई होंगी। यहाँ मैंने सभी से कह दिया था कि मूर्च्छा की स्थिति में भी मैं ईड़ा मार्ग को स्वच्छ करने के लिए कार्य करूंगी। तीन दिनों तक प्रतिदिन लगभग पचास बार वमन (उल्टी) करके मैंने ये कार्य किया। और अच्छा हुआ कि स्वच्छ करने का यह कार्य सम्भव हो पाया। ये शरीर उसी लक्ष्य के लिए उपयोग किया जाना चाहिए जिसके लिए यह बना है। और इसी लिए मैं बीमारी और कष्टों से चिन्तित नहीं हूँ। इसके विपरीत ऐसे सभी तथा अन्य प्रयोग इस अवतरण में करने होंगे। इसके विषय में आप चिन्तित क्यों हैं, इस शरीर का और क्या उपयोग है ? मुझे कभी पीड़ा नहीं होती। मैं तो केवल इतना चाहती हूँ कि इस शरीर रूपी प्रयोगशाला में कोई न कोई कार्य चलता रहे। समय बहुत कम है और किया जाने वाला कार्य बहुत बड़ा है।

केवल अपने आत्म–साक्षात्कार के बल पर आप लोग अपने ईड़ा मार्ग को स्वच्छ नहीं कर सकते। मैं जानती थी कि इसे अन्दर से साफ करना होगा। प्राचीन काल में सभी साधकों को अपने शैशव काल से ही अपने गुरुओं के घर पर या एकान्त स्थानों पर रहकर निरंतर यह क्रिया करनी पड़ती थी। व्यक्तिगत रूप से कई–कई जन्मों तक साधकों को यह कार्य करना पड़ता था। आप लोगों ने अब सामूहिकता की स्थिति पा ली है, मैंने सामूहिक चेतना जगा दी है। यद्यपि आप कहते हैं कि मैनें ये कार्य किया, 'मेरे तेरे' का अन्तर सामूहिक चेतना में नहीं होना चाहिए। त्वं भवानी, त्वं दुर्गा, त्वं अम्बिका ' आदि मन्त्र ईड़ा नाड़ी के लिए ठीक हैं, परन्तु सहजयोग में जब आप स्थापित हो जाते हैं तब आपको कहना होगा, अहम् भवानी। ' अहम् भवानी के साथ ये मंत्र अब स्वतः घटित हो जाएगा। ये बात मैं आपको बताती हूँ।

ईड़ा नाड़ी को स्वच्छ करने के पश्चात् मैं पिंगला नाड़ी को स्वच्छ कर रही हूँ। ईड़ा नाड़ी के बन्धनों के कारण सहजयोगी आलसी प्रवृत्ति के हो गए थे। आलस्य और काम को टालने की प्रवृति उन पर हावी हो गई थी। काम से आना–कानी करने के कारण उनका चित्त भटक गया था। परन्तु अब मैंने पिंगला नाड़ी को जागृत करने का कार्य आरम्भ कर दिया है। आप सभी लोग अपने दाईं ओर दायाँ हाथ ऊपर को ले जाएं और सिर के ऊपर से ले जाकर बाईं ओर को नीचे गिराएं परन्तु ऐसा करते हुए अपनी इच्छा शक्ति का उपयोग करें ताकि आपकी इच्छा फलीभूत हो। सामूहिकता की जागृति से आपको बहुत से ऐसे लोग मिल जाऐंगे जो इस कार्य में आपकी सहायता करेंगे जिसे आप अभी तक अकेले कर रहे हैं। सहस्रार क्षेत्र में आपका हृदय भी सम्मिलित है। हृदय के बंधन जब कम हो जाते हैं तो लैम्प के साफ किए गए शीशे की तरह से , आत्मा की फूट पड़ने वाली किरणें सहस्रार की को जागृत करती हैं और दिव्य प्रकाश फैलता है जिससे हम सहस्रार पर अनुभव करते हैं। यह प्रकाश रंग–बिरंगे हृदय को चहुँ ओर से प्रकाशमय करता है तथा आनन्ददायी एवं सुखकर गुणों से इसको सजाता है। शनैः शनैः यह अवस्था बढ़ेगी और आपमें स्थापित हो जाएगी। अधिकत्तर सहजयोगियों को यह विधि अपनानी चाहिए। परन्तु हाथों को केवल मशीन की तरह से चलाना ही

काफी नहीं है जो भी कुछ आप करें पूरे विश्वास के साथ करें कि आपकी पूजा में एक योद्धा का उत्साह हो और एक कलाकार की संवेदना। देवी–देवताओं को जागृत करने के लिए मंत्रों का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध होना चाहिए और पूरे हृदय से किया जाना चाहिए। केवल तभी जागृति घटित हो पाएगी। एक साधारण सिद्धांत आपको समझना चाहिए कि माचिस की छोटी सी तीली से इतनी बड़ी अग्नि कैसे प्रज्जवलित की जा सकती है ? तेल में यदि पानी मिला हुआ हो तो दीपक की बत्ती किस प्रकार जलेगी ? अपनी तुच्छ समस्याओं का समाधान करने के लिए जो सहजयोगी, सहजयोग का उपयोग कर रहें हैं वो किस प्रकार ज्योतिर्मय हो पाएँगे ? प्रकाश स्तम्भ (Light House) क्षण भर के लिए भी स्वयं को प्रकाश नहीं दिखाते। अतः इन्हें अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है और इनकी देखभाल की जाती है।

कृपया यह पत्र सभी सहजयोगियों तक पहुँचाऐं।

आपकी माँ
निर्मला
(निर्मला योग से उद्धृत)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का एक पत्र
मराठी से अनुवादित
19 दिसंबर 1982

मुझे आप सबके पत्र प्राप्त हुए। परन्तु मैं किसी को भी पत्र न लिख सकी क्योंकि लन्दन में सहजयोग कार्य ज़ोरों पर चल पड़ा है।

दिल्ली के सहजयोगी बहुत कम पत्र लिखते हैं। परन्तु वे सब प्रसन्न हैं। बम्बई के सहजयोगी भी ठीक हैं। राहुरी के सहजयोगी भी आनंद में हैं। बम्बई के सहजयोगियों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है अतः उन्हें बहुत से आक्रमणों का सामना करना पड़ा। उन पर पहला आक्रमण तब हुआ जब मैं अमरीका में थी। उस समय बहुत से सहजयोगी प्रभावित हुए और बहुत से चले गए। बाद में जब लन्दन के सहजयोगियों पर आक्रमण हुआ तो उन्होंने सामूहिक रूप से गलत मार्ग अपनाया, ऐसा मार्ग जो खतरों और हानियों से परिपूर्ण था। वहाँ के बहुत से दुष्ट लोग अभी भी बाधाओं के रूप में कुछ सहजयोगियों के अन्दर छुपे हुए हैं। ये दुष्ट आप पर आज्ञा और हृदय से आक्रमण करते हैं। आज्ञा से वे सहजयोग विरोधी विचार आपके मस्तिष्क को भेजते हैं और हृदय से वो शिकायतें करते हैं। आप यदि इन्हें पहचान लें तो ये प्रभावहीन हो जाएंगे। इसके लिए केवल एक ही इलाज है जिसका उपयोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के बाद ही किया जा सकता है। आपकी कार यदि चालू नहीं है तो आपके ब्रेक और गतिवर्धक व्यर्थ हैं। परन्तु इन्जन चालू होने के पश्चात् यदि आप गतिवर्धक का उपयोग नहीं करते तो किस प्रकार कार आगे बढ़ेगी। आप इच्छा अनुरूप किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आपके सभी आत्म सुझाव (Auto Suggestions) फलीभूत होंगे। इसकी विधि इस प्रकार है :– आपका चित्त मुझ पर होना चाहिए और अपनी आज्ञा से आपको निम्नलिखित विचार करने चाहिए :– हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें आत्म साक्षात्कार दिया गया है ! हम सहजयोगी हैं। परमात्मा ने हमें चुना है। यदि हम दुर्बल होंगे तो किस प्रकार कार्य कर सकेंगे ? आदिशक्ति ने हमें पूर्ण मानव जाति का उद्धार करने की शक्ति दी है। इन विचारों से आपको आलोचना करनी चाहिए :– " हमारे प्रति परमात्मा का प्रेम कितना गहन है ! उन्होंने हमें आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया है, वे दया के सागर हैं ! हमारी सारी गलतियों को भुलाकर वे हमारे हित के लिए कार्य कर रहे हैं और हम उनसे अपनी गलतियों को क्षमा करने के स्थान पर उनके विरुद्ध शिकायतें कर रहे हैं ! निम्नलिखित विचार आपके हृदय को प्रसन्न करेंगे : " हे परमात्मा कृपा करके हमें अपने प्रेम की शक्ति प्रदान कीजिए " कृपा करके मुझे ब्रह्माण्ड में व्याप्त अपने प्रेमसागर की बूँद बना लीजिए ताकि इसकी प्रेममय धड़कन मेरे जीवन से प्रसारित हो उठे और मैं इसी आनन्द में डूबा रहूँ।"

परमात्मा करें कि आपका जीवन परमेश्वरी प्रेम से सराबोर रहे। स्वयं से भी अधिक सदैव आपको प्रेम करने वाली।

आपकी माँ

निर्मला

(निर्मला योग से उद्धृत)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का एक पत्र
मराठी से अनुवादित
19 दिसंबर 1982

मनुष्य को शांति, धन, सत्ता आदि की इच्छा होती है। परन्तु यदि परमात्मा इन सारी चीज़ों का स्रोत हैं तो मानव में परमात्मा प्राप्ति की इच्छा क्यों नहीं होनी चाहिए ? परमात्मा से मिलने की कामना और आकांक्षा क्यों नहीं होनी चाहिए ? हमें चहिए कि परमात्मा से शांति के लिए प्रार्थना करें और शांति रूप परमात्मा से मिलने की इच्छा बनाए रखें। एक सर्वसाधारण मनुष्य और एक सहजयोगी के संतोष में यह अन्तर होना चाहिए। व्यक्ति को परमात्मा से मिलन की अपनी इच्छा को भी परमात्मा के चरणों में अर्पित करने के लिए तैयार होना चाहिए। पूरा चित्त परमात्मा पर ही होना चाहिए और इसके लिए व्यक्ति में समर्पण, दृढ़-निश्चय और चित्त की एकाग्रता (तपस्विता) होनी चाहिए। इसके लिए सभी भौतिक लगाव नष्ट होने चाहिए। संसार में चिपके रहने के लिए क्या है ? आपको इन चरण कमलों की गरिमा महसूस करनी होगी जिनमें सभी कुछ विलीन होकर शान्त हो जाता है। केवल तभी आप अपनी गरिमा को पा सकेंगे।

व्यक्ति को अपनी उपलब्धियों की शेखी क्यों बघारनी चाहिए ? आपको ये समझना आवश्यक है कि आप जो भी कुछ कर रहें हैं ये सब परमात्मा की शक्ति है अर्थात् आदिशक्ति का कार्य है और आप इन चमत्कारों के साक्षी मात्र हैं। उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए आपको प्रार्थना, करनी चाहिए " हे परमात्मा मेरे अन्दर का 'मैं भाव' समाप्त हो जाए " मेरे अन्दर यह सत्य स्थापित हो जाए कि हम सब आप ही के अंग-प्रत्यंग हैं, ताकि आपका दिव्यानन्द हमारे रोम-रोम से स्पंदित हो उठे। केवल तभी यह जीवन आपके सुन्दर संगीत से परिपूर्ण हो पाएगा और पूरी मानव जाति को मंत्रमुग्ध कर लेगा तथा पूरे विश्व को प्रकाश दिखाएगा।" आपके हृदयों से प्रेम प्रवाहित होना चाहिए। प्रेम अथाह है। आपका चित्त भौतिक वस्तुओं पर है और बातें आप शाश्वतपन की करते हैं! आपको चाहिए कि शाश्वत (Eternal) में विलीन हो जाएं ताकि शाश्वत जीवन प्राप्त कर सकें।

आप परमात्मा के साम्राज्य के अधिकारी हैं। फिर भी आप खीझ क्यों रहे हैं ? इस साम्राज्य में सारे देवता आपके बड़े भाई हैं, कुण्डलिनी के पथ पर भिन्न रूपों में वे विद्यमान हैं। आपको चाहिए कि उन्हें पहचानें और प्राप्त करें कुण्डलिनी उनकी माँ है, हमेशा उनकी छत्रछाया में रहने का प्रयत्न करें। उनके बच्चे बनें और वे आपको अन्तिम लक्ष्य तक ले जाएंगी। सभी चीज़ों के स्रोत को एक बार जब आप प्राप्त कर लेंगे तो बाकी का सभी कुछ आपको आसानी से मिल जाएगा।

परन्तु आप लोग ध्यान धारणा, प्रेम और शांत जीवन के अभ्यास में दृढ़ नहीं हैं। आप तो मुझे भी बड़े अनियमित (Casual) ढंग से लेते हैं ! परन्तु सांसारिक मामलों में आप कितने उत्सुक हैं ! किसी भी चीज़ को पाने के लिए आप किस प्रकार अड़ जाते हैं ! सांसारिक मामलों में आप ढीले-ढाले (Casual) क्यों नहीं हैं ? मैं क्योंकि महामाया हूँ इसलिए वास्तविकता से दूर न भागें। मुझे प्राप्त करें। मैं आपकी हूँ। मैं आपके लिए हूँ। मैने आपको वह दिया है जो महान सन्तों और पैगम्बरों की पहुँच से भी परे है। किस प्रकार आप इसका उपयोग करेंगे ? आपको बहुत बड़ी मूल्यवान चीज़ दे दी गई है। इसकी एक लहर से हजारों सितारों और ग्रहों की सृष्टि की गई थी।

आज गुरु पूजा का दिन है। आपने मुझे क्या गुरुदक्षिणा दी है ? इस बात को समझें कि आपका पैसा, आपकी गुरुमाँ के चरणों की धूल सम भी नहीं। आपको अपने हृदय समर्पित करने चाहिएं- केवल स्वच्छ एवं पावन हृदय। अपने शरीर

को पावन करें। इस मामले में आलस्य न करें। शपथ लें। अवश्य प्रातः उठें और कम से कम एक घण्टा ध्यान धारणा एवं पूजा पर लगाएं। सायंकाल आरती एवं ध्यान करें।

शैतानों के शिष्य श्मशान में कठोर परिश्रम करते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोग सभी कुछ इतनी लापरवाही से क्यों लेते हैं ? गप्पबाजी बन्द कर दें। ईर्ष्या और झगड़े छोड़ दें। समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। खजाने की चाबी होने के बावजूद भी क्या आप खाली हाथ जाना चाहते हैं।

आप यदि परमात्मा के साम्राज्य को स्वीकार नहीं करते तो शैतान का साम्राज्य आएगा और इसके लिए आप ही दोषी होंगे। याद रखें क्योंकि आप सहजयोगी ही मेरे प्रिय लोग हैं और अधिकारियों के रूप में आप ही को चुना गया है। आप यदि इसकी अनदेखी करते हैं तो एक ओर तो आनन्द के इस महान स्रोत से आप वंचित होंगे और दूसरे सहजयोग के अधूरे ज्ञान के कारण आप अपना अधिकार खो देंगे। अतः विवेकशील बनें और दृढ़ता–पूर्वक खड़े रहें। हर क्षण हजारों निर्देश हैं। आप ही लोग पूरे विश्व का हित देखेंगे। गतिशील होने के लिए अपने निकम्मेपन पर काबू पा लें। आप ही लोगों ने कप्तान बनना है। परमात्मा के संगीत को अपनी बाँसुरियों से बजने दें।

अपनी भावनाओं में उन सब लोगों से ऊँचे उठें जिन्हें अभी तक आत्म–साक्षात्कार एवं आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ और परमात्मा का साम्राज्य आपका होगा। मेरी कामना है कि ये मंगलमयता आपको प्राप्त हो। मेरे सारे प्रयत्न इसी दिशा में हैं। आपको मन्दिर सम बनाया गया है। इसे स्वच्छ रखें।

आपमें से कुछ लोग कृपा सागर में आनन्द ले रहें हैं। मेरा आशीर्वाद है कि आप सभी प्रसन्न हों। आपका सांसारिक जीवन और संतोष उसी स्तर का होना चाहिए। सहजयोगियों का संतोष और उनके हालात में संतुलन होना चाहिए। हमारी दोनों टांगे बराबर बढ़ती हैं। एक टाँग यदि दूसरी टांग से छोटी होगी तो आप लंगड़े हो जाएंगे। मैं आपको ये नहीं कहना चाहती कि यदि संतोष कम है तो आप अपने हालात का स्तर भी नीचा कर लें। परन्तु सहजयोगियों का संतोष हालात पर निर्भर नहीं है। हालात जो भी हों वह प्रसन्न रहता है। यदि वह प्रसन्न नही है तो उसका संतोष सतही है। आंतरिक नहीं। परमात्मा आपको अपने चरण कमलों में निरंतर स्थान प्रदान करें।

आपकी माँ निर्मला।
(निर्मल योग से उद्धृत।)

श्रीमाताजी के कथनोंनुसार
प्लूटो नक्षत्र पर रे हेरिस के विचार

पिछले शरद एक्सीटर (Exeter) इंग्लैंड में श्रीमाताजी ने हमें बताया कि प्लूटो श्री कल्की का नक्षत्र है और इस अवतरण में सौर–मण्डल में यही उनका स्थान है। खगोलशास्त्रियों ने श्री आदिशक्ति के पृथ्वी पर अवतरित होने के कुछ वर्ष उपरान्त वर्ष 1931 में प्लूटों नक्षत्र को खोज निकाला। आश्चर्य की बात है कि इस नक्षत्र को इस कार्य मे रत खगोलशास्त्री के सहायक एक किसान लड़के ने खोजा था। ज्योतिषियों के अनुसार प्लूटो का सम्बन्ध मृत्यु, पुनर्जन्म, विनाश तथा गहन सामूहिक अचेतन की अभिव्यक्ति करने से है। आज भी ये नक्षत्र अपनी अनियमित परिक्रमा और हमारे सामूहिक मन पर अपने प्रभाव के कारण पहचाना जाता है। इसकी परिक्रमा वास्तव में अत्यन्त असाधारण है। बाकी सभी नक्षत्र सूर्य की एक ही मार्ग से परिक्रमा करते हैं। एक ही मार्ग से। परन्तु प्लूटो उन्हें एक कोण से काटता है। अण्डाकार मार्ग पर चलता है और कभी–कभी तो वरुण नक्षत्र की परिक्रमा में प्रवेश कर जाता है। अतः सौर परिवार में खोजे गए नक्षत्रों में से ही प्लूटो भी एक नक्षत्र है।

वर्ष 1979 में प्लूटो वरुण की परिक्रमा में आया और वहाँ यह 1999 तक रहेगा। नवंबर 1983 में प्लूटो ने वृश्चिक (Scorpio) में प्रवेश किया और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह उसकी राज्यसत्ता का चिन्ह है जहाँ यह अत्यन्त शक्तिशाली होता है। (वृश्चिक– गुरु, मृत्यु और पुनर्जन्म का चिन्ह है।) भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वरुण जल का देवता है और प्लूटो छिपी हुई अथाह गहराइयों का। ज्योतिषज्ञ वृश्चिक की परिवर्तन शक्ति को प्लूटो की ही देन मानते हैं। वृश्चिक मंगल ग्रह का भी शासक नक्षत्र है, मंगल ग्रह जो श्री गणेश का नक्षत्र है। मंगल युवा योद्धा है जबकि प्लूटो युद्ध का प्रभाव है, उसकी ही उप–अवस्था। या हम ये कह सकते हैं कि यदि मंगल श्री गणेश हैं तो प्लूटो श्री महागणेश। ये वैसे ही है जैसे श्री ईसामसीह युग के अंत में अपनी ग्यारह विध्वंसक शक्ति के साथ श्री कल्की रूप में अपने सफेद घोड़े पर बैठ कर लौटें।

विश्व इतिहास की दृष्टि से आधुनिक युग जिसमें हम रहते हैं, नोस्ट्राडमस ने माना कि वर्ष 1999 नए युग से पूर्व का अंतिम वर्ष होगा। यहुदियों का पांचांग भी छः हजार वर्ष कह रहा है तथा विलियम ब्लेक ने भी छः हजार वर्ष पूरे होने पर पुनरुत्थान की बात की है। परन्तु इस विषय में हम कितने निश्चित हो सकते हैं ? ज्योतिष के अनुसार हम प्लूटो के साथ अद्वितीय अवस्था में हैं क्योंकि ये नक्षत्र न केवल अपनी राशि में प्रवेश कर रहा है परन्तु इसके साथ–साथ वरुण की परिक्रमा में भी प्रवेश कर रहा है। वरुण समुद्र का देवता है और इसे त्रिशूल पकड़े हुए दिखाया गया है। संभवतः प्रतीकात्मक रूप से यह तीन नाड़ियों, तीन गुणों या श्री आदि कुण्डलिनी की तीन शक्तियों–श्री महालक्ष्मी, श्री महासरस्वती और श्री महाकाली को दर्शाता है। हमारे अन्दर वरुण स्वाधिष्ठान चक्र है–भवसागर की, भ्रम सागर और भौतिक अस्तित्व की बाह्य सीमा। सम्बंधित अस्तित्व जिससे आगे बुद्धि या विचार शक्ति नहीं जा सकती, वरुण हमारे अनुभव का पूर्णत्व है। अतः परिर्वतन, मृत्यु, विनाश तथा गहन परिर्वतन का नक्षत्र प्लूटो अर्थात् श्री कलकी मानवीय चेतना के क्षेत्र में – वर्ष 1999 तक वरुण की कक्षा में आ गया है। अत्यन्त दिलचस्प बात है कि ज्योतिष पांचांगो में सभी साधकों ने प्लूटो के आने की आशा की थी। थोड़े से समय के लिए प्लूटो हमारी चेतना में गतिशील होता है। फिर भी ये इतना विशेष क्यों है ? हर ढ़ाई सौ

साल में प्लूटो वरुण की कक्षा में जाता है और अपनी राशि वृश्चिक में भी प्रायः दो सौ से ढ़ाई सौ वर्षों के पश्चात् जाता है। परन्तु इन दोनों नक्षत्रों के मिलने का परिणाम हर छः हजार वर्ष में आता है। अतः इन दोनों घटनाओं का एक के बाद एक घटित होना अत्यन्त दुर्लभ है। उदाहरण के रूप में यदि हम पश्चिम के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि जब–जब भी प्लूटो ने वृश्चिक में प्रवेश किया तो आलस्य और सुखपरता का समय आया। उसके पश्चात् अति नैतिकवाद काल आया जिसमें नए धार्मिक विचारों का उदय हुआ। अमरीकन क्रान्ति, नव चेतना (Renaissance) और मध्य युग की पराकाष्ठा इसके कुछ उदाहरण हैं। जब–जब भी प्लूटो अपनी राशि में प्रवेश करता है तो लम्बे समय तक प्रभावित करने वाले नाटकीय परिवर्तन मानवीय सामूहिक चेतना में होते हैं।

इसके अतिरिक्त अब हम एक नए युग के शीर्ष पर हैं – कुंभ का युग(The Age of Aquarius) सर्व–साधारण मनुष्य को ये सब समझाना कठिन है। परन्तु वास्तव में बारह युग होते हैं जिस तरह से बारह राशियाँ हैं और हर राशि में पृथ्वी दो हजार वर्ष रुकती है। ईसा मसीह का युग मीन राशि (Pices) का युग है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अब इसका अन्त आ गया है। मीन माया है। भ्रम का युग है जबकि कुंभ जल वाहक है अर्थात् आत्मा रूपी जल के सामूहिक घड़े का वाहक अर्थात् कुण्डलिनी अर्थात् सहजयोगी गण। अतः सहजयोगियों को मानवता को नए युग तक ले जाने के लिए श्री माताजी का यंत्र बनना चाहिए। हमें चाहिए कि इस कार्य की विशालता को समझें और मनुष्य मात्र के सामूहिक उत्थान की आवश्यकता को भी । मीन राशि यदि अनिश्चितता है तो कुंभ मानव जाति के लिए निश्चितता होनी चाहिए। सहजयोग यदि उड़ान ले ले और स्थापित हो जाए तो कुछ भी अनिश्चित न रहेगा।

प्लूटो के वरुण की कक्षा में प्रवेश, अपनी राशि वृश्चिक में प्रवेश और पृथ्वी के कुंभ युग में प्रवेश का एक ही समय पर घटित होना इसकी ओर इशारा करता है। हम योगदान दें या न दें परिवर्तन तो आएगा ही। प्लूटो का सतही तापमान सबसे ठण्डा है। यह 0 से तीन डिग्री ऊपर होता है। और सितारों तथा अंतरिक्ष के बीच के तापमान से थोड़ा सी अधिक शीतलता आत्मा का गुण है। प्लूटो जमे हुए तत्वों या ठोस हुई मिथेन गैस से बना है। सूर्य से इतनी दूर होते हुए जितने बृहस्पति और शनि हैं यह नक्षत्र तरल गैस की अवस्था में होता है और 0 तापमान से भी ऊपर यह जमता है। यही तापमान आत्मा का है मिथेन गैस CH_4 या 4 हाइड्रोजन अणु + 1 कार्बन अणु मूल तत्वों का जैव मिश्रण (Organic Compound) है। कार्बन कठोर काला तत्व होता है या प्रायः हीरे की तरह का पदार्थ । अपने आप यह जीवन नहीं बना सकता। परन्तु अपनी चार संयोजकताओं के कारण जीवन के विकास में सहायक बन जाता है। इसी कारण से यह श्री गणेश है। मिथेन या CH_4 अन्तिम तत्व नहीं है। उदाहरण के रूप में तेल के पुराने भण्डारों में यह प्राकृतिक गैस के रूप में मिलता है या दलदल से निकलने वाली गैस के रूप में। अतः यहाँ प्लूटो या श्री कल्की की बनावट में पूर्ण विलय और पुनर्जन्म निहित हैं।

प्लूटो का एक दिन, इस नक्षत्र का अपनी धुरी पर एक चक्कर हमारे सात दिनों के बराबर है। इसकी परिक्रमा और आकार की विशेषताओं को देखते हुए हाल ही में इस बात का पता लगाया है कि इस पर चन्द्रमा है और यूनानी पौराणिक

कथाओं के अनुसार मृत्यु की नदी पर आत्मा को ले जाने वाले नाविक चेरो (CHARON) के नाम पर इसका नामकरण किया गया है। उस चाँद की खोज वर्ष 1979 के आस–पास की गई अर्थात् उस समय जब इस नक्षत्र से जुड़ी हुई मानवीय चेतना के परिवर्तन सम्बंधित हर चीज़ घटित होती हुई दिखाई देती थी। ये वो समय था जब श्रीमाताजी बताने लगीं थी कि श्री कल्की की अभिव्यक्ति आरम्भ हो रही है। इस नक्षत्र के हिसाब से इस पर देखे गए चाँद का आकार बहुत बड़ा है। ऐसा लगता है मानो यहाँ दोहरी नक्षत्र प्रणाली हो। चैरों (CHARON) कल्की का सफेद घोड़ा है या उसका वाहन है। श्री कल्की दयाविहीन होकर निर्णय करते हैं। और चेरों, प्लूटो का उसी प्रकार से वाहन है जैसे सहजयोग श्रीमाताजी का वाहन है। लक्ष्य प्रणाली का ये माध्यम मात्र है। अपने आप में पूर्ण नहीं। प्लूटो की परिक्रमा में अनियमितताएं मानव में भयंकर परिवर्तन लाती हैं। एक ही मानव जाति के रूप में हमें चाहिए कि हम आत्मा के प्रति समर्पित हो जाएं।

जब सूर्य का प्रकाश मिथेन गैस को वाष्प बनाकर उड़ाता है तो कभी–कभी प्लूटो पर एक विशेष वातावरण बनता है। ऐसा तब होता है जब अपनी अनियमित परिक्रमा में प्लूटो सूर्य के करीब आता है और जब मार्ग में चाँद नहीं होता ऐसे में सूर्य का प्रकाश एक ओर से इस पर पड़ता है। इस प्रकार सर्वशक्तिशाली सूर्य जो कि प्लूटो के कभी न खत्म होने वाली शीतलता का विरोधी है, प्लूटो की शक्ति की अभिव्यक्ति करता है। सौर प्रणाली में श्रीमाताजी के भी तीन स्थान हैं :– हृदय में शुक्र, चन्द्रमा और प्लूटो उनके सिर पर है। इस अवतरण में प्लूटो उनका वाहन है – श्री कल्की रूप में जो कि प्रलय की अंतिम शक्ति है।

अतः हमे चाहिए कि बाह्य चिंता को भूलकर कभी तो अपनी आत्मा के विकास को देखें। उस अवस्था की ओर जो सब से परे है। यह वह क्षण होता है जब हम उत्क्रान्ति पथ पर छलांग लगाते हैं। उत्क्रान्ति तो होनी है परन्तु किस मार्ग से हम इस पथ पर बढ़ेंगे ये हम पर निर्भर करता है। पारंपरिक ज्योतिष के अनुसार प्लूटो का संबंध भावनात्मक तथा आर्थिक कार्यों से भी है और दिलचस्प बात है कि दिसम्बर / जनवरी 82 / 83 में प्लूटो वृश्चिक के समूह में 1/2 समीप तक पहुँचा और विश्व मुद्रा जैसे पौण्ड आदि का मूल्य नाटकीय ढंग से गिर गया। विलियम ब्लेक के येरोशलम के या मिल्टन के कुछ पन्ने पढ़ने मात्र से हम जान सकते हैं कि आने वाले कुछ वर्षों में यदि मानव के प्रयत्न आत्मा प्राप्ति की ओर न होकर आर्थिक उत्क्रान्ति की ओर हुए तो अर्थव्यवस्था पतन की ओर चली जाएगी क्योंकि कल्की की अभिव्यक्ति मानव के उच्च मूल्यों की ओर जाने पर बल देती है। व्यापार और पैसे पर जितना समय हमने बर्बाद किया है उसने हमें कहाँ पहुँचाया क्योंकि ब्रह्माण्ड तो एक दूसरे ही स्तर की अभिव्यक्ति की ओर बढ़ रहा है और मानव उसका एक हिस्सा है ? शनैः– शनैः मानव के सम्मुख ये स्पष्ट हो जाएगा कि केवल आत्मा के प्रति समर्पण और अहं और प्रतिअहं के त्याग के माध्यम से ही राष्ट्र और मानव प्रजातियाँ जीवित रह पाएगी। बसंत का समय प्रचुर बनाएं, क्योंकि इसके बिना इस नक्षत्र का जरा सा भी भौतिक स्तर पर संतुलन परिवर्तन महान कठिनाइयों और कष्टों का कारण बन सकता है। यह डराने की बात नहीं है परन्तु हमें सहजयोग को अपनाकर मानवीय उत्क्रान्ति की विस्मयकारी अवस्था प्राप्त करने के लिए खुद को श्रीमाताजी के निर्देशानुसार सहजयोग को अपनाना होगा। इस

वर्ष दिल्ली के एक प्रवचन में श्रीमाताजी न कहा कि प्लूटो बहुत सी बीमारियों का कारण भी हो सकता है और निदान भी। आइए प्रार्थना करें कि हम इस प्रकार से प्लूटो की शक्ति के सम्मुख समर्पित हो जाएं कि व्यक्तिगत स्तर पर रोग घटित न होकर रोगों से मुक्ति ही प्राप्त हो और सम्पूर्ण मानवजाति सामूहिक रोगों के लिए सहज इलाज खोज सके, ऐसे रोगों के लिए जो पूरी मानव जाति को एक दूसरे से अलग करके कष्टों में फँसाते हैं। इलाज केवल ये है कि परम पूज्य श्रीमाताजी के चरणों पर नतमस्तक होकर सहजयोग के माध्यम से उन्हें अपना अन्तर्परिवर्तन करने दें। इन्हीं दिनों में, मार्च 83 में श्रीमाताजी ने कहा था कि हम सब उनके स्वास्थ्य की प्रार्थना करें। उनका शरीर सहजयोगियों के सामूहिक स्वास्थ्य को दर्शाता है। अतः यह आवश्यक है कि प्लूटो की शक्ति को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उपयोग करके हमने स्वयं को रोग मुक्त करना है। ताकि हमारे कारण से हमारी प्रिय श्रीमाताजी को कष्ट न हो और उनका असीम प्रेम बरसता रहे। जैसे कुरान में लिखा है कि जिस मनुष्य के पास देखने के लिए आँखें और सुनने के लिए कान हैं वह सर्वत्र परमात्मा के प्रेम उनके कार्य तथा योजनाओं को स्पष्ट देख सकता है।

हम सभी बच्चे सर्व शक्तिमान परमात्मा की शुद्ध इच्छा को नतमस्तक नमन करते हैं।

(निर्मल योग से उद्धृत।)

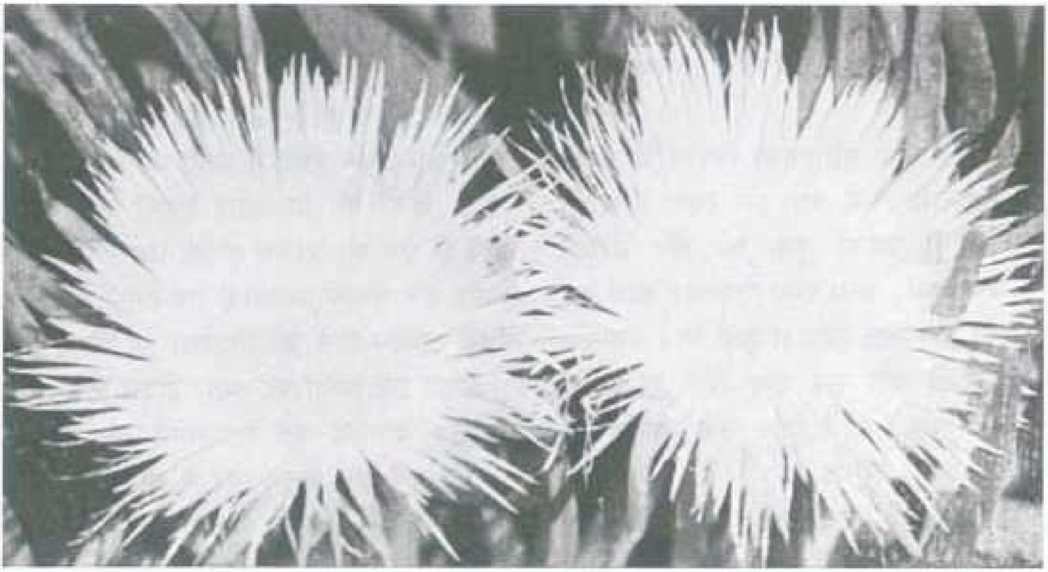

माँ का प्रेम कवच

ओम त्वमेव साक्षात् प्रेमतत्व साक्षात्, प्रेम दायिनी साक्षात्, प्रेम शक्ति साक्षात् आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

वास्तव में यह परमात्मा की बहुत बड़ी कृपा है कि अब सहजयोग में हम सभी को जीवन का सत्य और सर्वोपरि प्रेममयी श्रीमाताजी प्राप्त हो गई हैं। प्रेममयी श्रीमातजी हमें अत्यन्त प्रेम करती हैं और हर कदम पर हमारी देखभाल करती हैं। उनकी करुणा एवं प्रेम अत्यन्त महान है। निश्चित रूप से वे ही प्रेम का स्रोत हैं।

प्रेम के इस कृपा सागर में हम सब क्रीडा कर रहे हैं, आनन्द से उछल रहे हैं और परस्पर प्रेम से नाच रहे हैं, मिलकर गा रहे हैं और ये स्थिति हमें चैतन्य–लहरियाँ एवं आनन्द की ओर ले जा रही है। सहजयोगियों के मध्य होना और इस प्रेम को बाँटना सदैव आनन्ददायी होता है। जहाँ भी प्रेम होगा, किसी प्रकार की नकारात्मकता या बाधा वहाँ न रुक सकेगी और न ही कोई समस्याएं वहाँ रह पाएंगी।

दिसंबर 1982 में लोनावाला शिविर के प्रथम दिन श्री महामाया ने ये बात हमें स्पष्ट दिखाई। एक सहजयोगी पकड़ा हुआ था और उसकी तबीयत खराब थी। अन्य लोग उस पर कार्य कर रहे थे परन्तु उसे कोई लाभ न हुआ था। अचानक कुण्डलिनी उठी और सब कुछ ठीक हो गया। हृदय और सहस्रार खुले और उस व्यक्ति को बहुत अच्छा लगने लगा।

इस परिवर्तन का कारण स्पष्ट था। तभी यूरोप के कुछ सहजयोगी वहाँ पहुँचे थे और अपने भारतीय भाई–बहनों से गले मिल रहे थे। ऐसे मिलन कितने सुंदर होते हैं ! एक दूसरे को गले लगाते हुए वे आनन्द– विभोर हो रहे थे। उनके हृदय से प्रेम उमड़ रहा था, आँखें चमक रहीं थीं और उनकी मुस्काने उनके चेहरों को तेजस्वी बना रहीं थीं। उनकी एकाकारिता भरपूर थी। और साक्षात् प्रेमदायिनी, साक्षात् सर्वव्यापिणी श्री माताजी अपने आनिन्दत बच्चों पर अपने प्रेम और चैतन्यलहरियों की वर्षा कर रहीं थीं। प्रेम स्वरूप माँ के बच्चे ज्योंही परस्पर मिले माँ का प्रेम उनके अन्दर प्रवाहित हो रहा था और उस प्रेम से वो पूरा वातावरण आशीर्वादित हो उठा था। इस दिव्य वातावरण में कोई भी नकारात्मकता किस प्रकार ठहर सकती थी ?

ऐसे बहुत से मौके होते हैं जब हमें इस बात का एहसास होता है कि श्री आदिशक्ति का प्रेम सर्वशक्तिमान है। श्री जगदम्बा माँ के प्रेम–आगोश में हम इतने सुरक्षित होते हैं कि कोई भी चीज़ न तो हमें परेशान कर सकती हैं और न ही हमारे चित्त को भटका सकती है।

उन्होंने हमारे लिए साहस और निडरता के अश्व तैयार किए हैं और हमें इन अश्वों की सवारी करने वाले योद्धा बनाया है। हम यदि इतना महसूस कर लें कि हम अपने हाथों में उन्हीं की प्रेम खड़ग थामे हुए हैं, उन्हीं की प्रेम ढाल हमारी रक्षा करती है, उन्हीं के प्रेम का आश्रय हमारा पथ–प्रदर्शन करता है और हमें सुचारु बनाता है तब हमारे अन्दर उनके विनम्र माध्यम होने का विश्वास आ जाता है।

आइए इन अश्वों पर सवार होकर नकारात्मकता की क्षुद्र बाधाओं पर सहजयोग की विजय का उद्‌घोष करें और विश्व–भर में श्रीमाताजी के नाम के महामन्त्र का निनाद करें।

जय श्रीमाताजी

(निर्मला योगा से उद्धृत।)

विज्ञान मनुष्य की खोज है रचना नहीं

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन– मुम्बई. 29.3.75

Practical करके आप से बताया था, कि सहजयोग क्या चीज़ है, उसमें क्या होता है, यह कैसे घटित होता है। उसी का मैंने वैज्ञानिक व्याख्या भी दी थी, Sceintific definition दिए थे। आखिर science जिसे हम science ,science कहते हैं, यह परमात्मा ने बनाया हुआ नहीं है, यह मनुष्य ने जो जो खोजा हुआ है उसे वह science कहता है। लेकिन उसने संसार की कोई भी चीज़ बनाई हुई नहीं है। उसका कोई भी नियम उसका बनाया हुआ नहीं, कोई सा भी शास्त्र उसका बनाया हुआ नहीं है। गणित का शास्त्र भी उसका बनाया हुआ नहीं है। उसके नियम, उसकी विधि, यह सब परमात्मा की बनाई हुई है। जैसे कि आप देखिये कि एक Circle होता है और उसका जो व्यास होता है उसके व्यास और उस व्यास की परिधि में जो एक ratio होता है, proportion होता है, वह आपने बनाया हुआ नहीं है। उसका नियम परमात्मा ने ही बनाया हुआ है कि वह इससे ज्यादा होगा या इससे कम होगा। ऐसा भी नहीं हो सकता है, वह जितना है वह उतना ही रहेगा। उसका ratio बँधा हुआ है। सब नियम जितने बनाए गये हैं वो परमात्मा ने बनाए हुए हैं। आप लोगों में से बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा है कि माताजी आप साढ़े तीन कुण्डल कहतीं हैं, कुण्डलिनी के साढ़े तीन कुण्डल क्यों कहती हैं ? एकदम scientific बात है। जो समझने वाला है वह समझ सकता है। आपने कभी घड़ी को देखा है क्या ? घड़ी में आप देखें तो circle का जो व्यास होता है जिसको कि आप diameter कहते हैं और जो circumference होता है, तो अगर वह सात हो तो यह बाइस होना पड़ता है, उससे ज्यादा नहीं होगा कम नहीं होगा, यह सात होगा तो वह बाइस होगा। उसका relationship हमेशा 22 व 7 होगा। और उनका एक co-efficient बनाकर ( ) पाया बनाया है। यह science है। न तो वह सात से आठ होगा अगर आठ होगा तो उसी proportion में होगा । हमेशा एक ही proportion में रहेगा। अब सात क्यों है diameter ? जब बिन्दु में से, मध्य बिन्दु में से diameter गुजरता है तो उसे सात होना पड़ता है। इसी प्रकार हमारे अन्दर जो सुषुम्ना गुजर गई है उसको भी सात होना पड़ता है, उसमें भी सात चक्र बनाए हैं। और उसे साढ़े तीन इसलिये होना पड़ता है क्योंकि diameter को आप आधा कर दीजिए तो साढ़े तीन हो जाएगा। अगर आप साढ़े तीन वलय बनाएं, उस पाया के ratioमें आप अगर साढ़े तीन वलय बनाएं , एक के ऊपर एक, कुण्डलिनी जैसे और बीच में से आप लकीर खींच दें तो उसके बराबर सात टुकड़े हो जाएंगे, लेकिन वो साढ़े तीन वलय होगा। है कोई यहाँ scientist या mathematician ? कहाँ है ? बराबर है कि नहीं ? साढ़े तीन वलय के बाद इस तरह से बनाएंगे एक के ऊपर इस तरह से साढ़े तीन वलय बनाएंगे और बीच में से जब उसके बीच मध्य बिन्दु को छेदकर निकालेंगे तब उसके अन्दर में वह सात जगह कटेगा और इसीलिए अपने अन्दर सात चक्र हैं। लेकिन circumference का हिसाब किताब अलग लगता है कि बाइस का आप ग्यारह करें तो ग्यारह होता है। देखिए कितना गणित है ? हरेक चीज़ का कितना गणित है आप देखिए जो मध्य में चीज़ चलती है तो सात के हिसाब से चलती है और जो उसके प्रकार में चलती है उसका जो प्रकार होता है वह ग्यारह के हिसाब से चलता है। इसीलिये अपने यहाँ अगर आज किसी को रुपए देते हैं तो ग्यारह देतें हैं। अब आपको समझ में आया होगा कि ग्यारह का क्या महत्व है।

हमारे शास्त्रों में जो चीज़ें लिखी हुई हैं ये अनादि हैं। उसको बड़े–बड़े गणितज्ञ भी समझ नही पाएंगे क्योंकि साधुओं ने जो खोजा वह लिख दिया। उन्होंने लिखा कि कुण्डलिनी साढ़े तीन बार लपेटे हुए एक coil है, एक कुण्डल है लेकिन यह नहीं बता पाए कि वह ऐसे क्यों है। Scientist बता पाएंगे कि आप साढ़े तीन इस तरह से लपेटिएगा तो पूरा circumference उसका cover हो सकता है। उसके बगैर हो ही नहीं सकता है। और बराबर सात ऊपर से नीचे तक छेद दीजिए उसमें बड़ा सा चक्र तैयार हो जाएगा। अब scientist इधर में खोज रहे हैं और उन्होंने उधर खोज लिया। अब इन दोनों के बीच एक अधूरापन है, वह सहजयोग से पूरा हो सकता है। सहजयोग science जहाँ रुक गया है, science जहाँ झुक गया है और science जहाँ हार गया है वहाँ उसको आशा दे सकता है और उसे बता सकता है कि जो उन्होंने बताया है वही तुम्हारी किताबों में लिखा है। परिभाषाओं का फर्क है। उसका कारण क्या है ? सहज योग उन साधुओं को भी पर्याप्त में ले जाता है, उन ऋषि मुनिओं को भी पर्याप्त में ले जाएगा जिंहोंने खोज के निकाला है। आपको आश्चर्य होगा, पर है बात सही। हमने बहुत बड़े साधु योगीराज देखें हैं वे ऐसे यहाँ पैसा वैसा इक्कठा नहीं करते फिरते हैं, वे बहुत बड़े जन हैं। वे अपने संसार से बाहर रहकर के और संसार की vibrations से सेवा कर रहें हैं। किन्तु हमने अभी तक किसी भी ऐसे आदमी नहीं देखा है कि जो आप लोगों जैसे कुण्डलिनी को उठा सकता है। एक इशारे से, सिवाए गणेश जी को छोड़ कर। गणेश के हाथ में जो एक छोटा सा साप होता है वही आप की कुण्डलिनी का प्रतीक है। सिवाए गणेश जी को छोड़ कर और आप लोग जो मेरे बेटे हैं व मेरी लडकियाँ हैं, जो मेरे सहस्रार से पैदा हुए हैं, मैंने किसी को नहीं देखा है जो कुण्डलिनी को इशारे पर खडी कर दे। बात सही है। इसमें बहुत से लोग यह कहेंगे कि भई ये कैसे ? इन लोगों ने इतनी मेहनत करी, इतना किया, यह कैसे ? एक पते की बात आपको बता दें जो कि राजा का मंत्री होता है वह सबकुछ जानता है कि राज्य को कैसे चलाना है और वो राज्य का सारा कार्यभार संभालता है। सबकुछ है, लेकिन जो घर की लक्ष्मी होती है, रानी होती है, वह अपनी चाबियाँ अपने बच्चों के हाथ में देती है, लेकिन मंत्री के हाथ में नहीं देती। होंगे पढ़े लिखे, बहुत विद्वान होंगे, होंगे बहुत पहुँचे हुए पुरुष, लेकिन मेरे सहस्रार से पैदा जो नहीं हुए हैं जब तक वे इस बात को मान नहीं लेते कि वे मेरे बेटे हैं उनको यह अधिकार मिल नहीं सकता और मिला भी नहीं। इसके लिए बहुतों ने मुझसे सवाल जवाब किए हैं अपने शिष्यों ने भी कि माताजी हम उनके पास गए थे, गुरुजी के पास गए थे, वह इतने बड़े आदमी हैं, आप उनको मानती हैं पर उनको तो यह काम नहीं आता जैसे हमें आता है। हमें तो मालूम है कि कौन से चक्र कहाँ पकड़े होते हैं, कहाँ कैसा होता है, हम तो यूं करके ऐसा हाथ कर देते हैं तो दूसरों के चक्र छूट जाते हैं और हमारे इशारे पर हजारों की कुण्डलिनियाँ उठती हैं और हम सबको पार करा देते हैं। यह कैसे ? वजह यह है कि तुम सब मेरे सहस्रार से पैदा हुए हो। एक और ऐसा इन्सान है ईसा मसीह जो कि माँ के हृदय से पैदा हुआ था। उसको भी यह अधिकार है। लेकिन वह समय भी ऐसा नहीं था कि वह यह काम कर सकता। पर आज वह समय भी आ गया है और तुम लोग तैयार भी हो गए हो। अब तो हो सकता है कि तुम कहो कि हम तो सामान्य लोग हैं, हम

अत्यंत सामान्य हैं और हम यह कैसे काम कर सकते हैं ? पता नहीं, लेकिन करते हो तो न, इसमें तो कोई शंका नहीं है तुम लोगों को कि तुम सबकी कुण्डलिनियाँ देख सकते हो, जान सकते हो और समझ सकते हो कि किसका हृदय चक्र पकड़ा है, किसका क्या पकड़ा है और उसे कैसे निकालना है और कैसे ठीक करना है। हज़ारों भूत बाधाएँ और बीमारियाँ और दुनिया भर की चीज़ें तुम लोग निकाल कर फेंक देते हो। और इन लोगों को देखिए, मैंने बड़े–बड़े महन्तों को देखा है कि हम वहाँ गए थे, हमें भी लकवा मार गया क्योंकि हमने किसी का लकवा ले लिया। तुम्हें तो न लकवा मारता है न कुछ नहीं मारता है। जब से तुम लोग पार हुए हो गए तुम्हारी तन्दरुस्ती ठीक हो गई। अगर किसी की खराब हो भी जाए ज़रा तो वह यूं ही ठीक हो जाती है। खैर छोड़िए। यह तुम लोगों के अनुभव हुए हैं। इस पर राहुरी में भी मुझसे प्रश्न हुआ था। वहाँ मैंने इतनी openly बात नहीं कही थी लेकिन बात यह है कि तुम मेरे सहस्रार से पैदा हुए हो। मेरे सर से मैंने तुमको पैदा किया हुआ है इसलिए तुम्हारे लिए विशेष अधिकार हैं। तुम लोग विशेष अधिकारी हो। मानती हूँ कि बाकि जो लोग हैं वे भी सहजयोग से पार हुए हैं। बड़े–बड़े साधु सन्त भी सहजयोग से पार हुए हैं। अविरल क्रियाएं करके, हज़ारों वर्ष तपस्या करके। लेकिन उनके अन्दर अभी तक acceptance नहीं है मेरी।

आज आपसे मैं खोलकर कह रही हूँ कि आप जब तक मुझे accept नहीं करिएगा तब तक यह काम नहीं होगा। मैंने यह बात पहले नहीं कही। जैसे कृष्ण ने कहा है कि "सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकम शरणं व्रज।" ऐसी ही मेरी भी बात है। जैसे कि Christ ने कहा था "I am the Light, I am the Path", वही मेरी भी बात है। I am the Destination not only the Path । लेकिन मैंने यह बात आज तक आप लोगों से कही नहीं थी। इसलिए क्योंकि पिछले अनुभव इतने खराब रहे। इसी वजह से मैंने बात नहीं की। आप लोगों को मेरी शरणागत लेनी पड़ेगी, मुझे माँ मानना पड़ेगा और मेरा बेटा बनकर के जीना होगा। उसके बगैर आपका कार्य नहीं होगा। इसी एक छोटी सी वजह के कारण आप लोग इस दशा में पहुँच गए कि बड़े–बड़े सन्त महात्मा लोग हार गए लेकिन वह नहीं पा सके। एक तो मेरा साक्षात् उनसे नहीं हुआ और दूसरी चीज़ अभी उनमें अहंकार बना हुआ है, कुछ स्वीकारे ही नहीं हैं। क्योंकि वो अन्जान में पार हो गए, उन्हें पता ही नही कि उनकी माँ कौन है। लेकिन तुमने मुझे जाना है तब तुम लोग पार हुए हो। यह समझ के रखो कि जरा सा तुमने इधर उधर कदम डगमगाया तब vibrations तुम्हारे छूट जाते हैं। तब तुम कहते हो माताजी यह तो All pervading है तो यह vibrations कैसे छूट जाते हैं ? All pervading में भी कहाँ से vibrations जाते हैं, सोचना पड़ता है। आप लोग कहीं भी रहें, किसी भी जगह रहें, जिस वक्त आप लोग सहजयोग के विरोध में अगर एक अक्षर भी कहेंगे तो आपके vibrations छूट जाएंगे और उसके बाद आप जो भी कार्य करेंगे जिस भी कार्य में आप रहेंगे उसमें भूत आपका साथ देगें, माँ नहीं देने वाली। मैंने ऐसे भी लोग देखे हैं जो मेरे यहाँ आते हैं थोड़े दिन vibrations लेते हैं और उनके ऊपर जब कुछ भूत बाधाएँ चढ़ जाती हैं तो वे भूत बाधा का काम करने लगते हैं। उनका ढंग और हो जाता है, उनका तरीका और हो जाता है। उनका बताना और हो जाता है। फिर वह कुण्डलिनी नहीं देखते हैं, वो ये बताते हैं कि घोड़े का नम्बर कौन सा है, तेरे बाप

का क्या होगा, तेरे माँ का क्या होगा, असलियत में नहीं आते। ऐसे अनेक लोग हमारे इस सहजयोग में आए और बिछड़ गए, थोड़े दिन रहे बिछुड़ गए फिर उन्होंने थोड़े दिन काम वाम किया इस तरह का, बड़े अपने को साधु गुरु महात्मा समझकर के काम किया और उसके बाद देखा यह गया कि उनके ऊपर बाधाएँ जम गईं और वो बहुत ही नुकसान व तकलीफ में फँस गए। इसीलिए एक बात आप जान लीजिए कि सहजयोग के विरोध में बात करने से, मैं चाहे आपको माफ कर भी दूँ लेकिन परम पिता परमात्मा आपको कभी माफ नहीं करेंगे। हमारे घर में मेरी अपनी लड़की का मैं आपको बताती हूँ कि एक दिन जरा सी गुस्सा हो गई मेरे ऊपर, फौरन उसके कान में से गरम गरम हवा निकलने लगी। उससे मैंने कहा कि तुम कान अपने रगड़ लो और कहो की माफ कर दो। मुझसे ऐसी बात कहना गलत है। सहजयोग के विरोध में तुमने एक अक्षर कहा, हालाँकि तुम मेरी अपनी लड़की हो लेकिन तुम्हें अधिकार नहीं है। यह सबसे बड़ी अनाधिकार चेष्टा है जो मैं आपके सामने आज खड़ी हूँ। यह आप लोगों के बुलाने का फल है। ऐसे भी देखिए कि मन्दिरों में मस्जिदों में, और जहाँ–जहाँ भक्त लोग माँ को पुकारते हैं तो माँ का हृदय उछलने लग जाता है। आपने देखा है कि आप जब कभी जरा सा भी आप गाना गाते हैं तो मेरे बदन से अनगिनत vibrations बहने लग जाते हैं। अगर कहीं भी मैं जरा सा गाना सुन लूँ या record सुन लूँ या cinema में ऐसा दिखाई दे जहाँ माँ को पुकारा जा रहा है तो मेरे सारे बदन से जैसे करोड़ों रश्मियाँ फूट पड़ती हैं जैसे vibrations निकल रही हों। यह आपने भी जाना हुआ है। यह आपने भी देखा हुआ है। इस चीज़ को आप भी समझते हैं कि ऐसा माँ को होता है। आज वह समय आ गया है कि आप ही का माँगना, आप ही की चाहत, आप ही लोगों की पुकार साकार मेरे अन्दर घुस जाए। मैं स्वयं से नहीं आई हूँ। मैं आप ही की पुकार से आई हूँ। आपके आनादि काल से जो पुकार व चिल्लाहट हो रही थी उसी के कारण मैंने यह शरीर धारण किया और अब भी आप ही लोग जो सर्व साधारण जन हैं, मुझे पहले पहचानेंगे और जो यह बड़े–बड़े साधु सन्त और बाबाजी बन कर बैठे हैं यह पहचानेंगे नहीं, जैसे न इन्होंने सीता को पहचाना था न राधा को पहचाना था न मेरे को पहचाना। और अब भी यह लोग नहीं पहचान पाएंगे। यह अब भी बड़े घमण्ड में बड़े बाबाजी बनकर बैठे हुए हैं। जो इन्सान अपनी माँ को भी नहीं पहचानता है उसको बाप क्यों पहचानें ?

सहजयोग को खिलवाड़ नहीं समझना चाहिए । सहजयोग को एक साधारण चीज़ नहीं समझना चाहिए। यह बड़ी अनुपम, अजीब, अजीबो गरीब चीज़ आई है। क्या आपको कभी किसी किताब में ऐसा लिखा मिला है कि अगर यह आपका चक्र पकड़ता है तो यह विशुद्धि चक्र है। क्या आपको कहीं पता हुआ है कि नाभि चक्र होता है और यह सहस्रार होता है ? आपको कभी किसी ने यह बातें बताई हैं क्या ? आपको कुण्डलिनी के बारे में किसी ने भी इतने खुल्लमखुल्ला कोई बात बताई है और दिखाई है क्या ? किसी ने भी इस तरह से संसार में आज तक, हमने भी पहले कभी भी यह कार्य नहीं किया जैसे आज हो रहा है। लेकिन आप लोगों का आधा अधूरापन इसको खत्म कर देगा। आप जो लेने आए हैं वो बहुत बड़ी चीज़ है बहुत ही बड़ी चीज़ है। उसका अन्दाज ही आपको आज नहीं है। एक दिन आएगा, चाहे मेरे ही आँख के सामने आजाए या बाद में आए, जब संसार में यह

पता हो जाएगा कि हम लोग अब एक नए आयाम में dimension में उतर गए हैं। लेकिन आप लोगों का आधा अधूरापन, हो सकता है कि, संहार की गति शीघ्र कर दे। धर्म का चक्र उल्टा घूम रहा है, यह आप जानते हैं और वह दिखाई दे रहा है। उसको सीधा घूमाने का कार्य सिर्फ सहजयोग से ही हो सकता है लेकिन जो लोग सहजयोग में आ रहे हैं उनको अत्यन्त धार्मिक, अत्यन्त सद्चित्त और अत्यन्त उदार चित्त होना पड़ता है। धर्म की पूर्ण व्याख्याएं उनको सीखनी है। सिर्फ vibration से नही होता है । बहुत से लोग मेरे सामने आते हैं तो बड़ी जोर–जोर से vibration उनके अन्दर आते हैं और जब बाहर चले जाते हैं तो ऐसे नहीं होता है। ऐसा तो हर जगह ही आना चाहिए आपको। ऐसी कौन सी जगह है जहाँ हम नहीं हैं ? हर जगह यह vibration आने चाहिएं आपको और इतने बलवत्तर होने चाहिए कि किसी भी प्रकार के काले vibration इसके ऊपर नहीं चढ़ें। क्योंकि आप जीवंत हैं। अभी हम राजन गांव के गणपति के पास गए थे। वहाँ हमने देखा कि राजन गांव के गणपति को, उस गणपति में से बहुत थोड़े–थोड़े vibration आ रहे थे। और जो लोग हमारे साथ थे वे इतने आश्चर्य चकित हो गए कि जब जागृत स्थान है तो इसमें vibration इतने कम क्यों आ रहे हैं ? मैंने कहा कि पहले तो यह बात सोचो कि इसको पहचाना किसने कि यह जागृत स्थान है। यह मनुष्य ने किया है ? जिसने पहचाना कि यह जागृत स्थान है वह कोई न कोई साधु सन्त रहा होगा कि उसने यहाँ vibration देखे होंगे और कहा होगा कि यह जागृत स्थान है। फिर जब वह जागृत पत्थर लाया गया तो हो सकता है किसी ने उसे shape देने के लिए थोड़ा बहुत चलाया हो, हो सकता है नहीं भी हो सकता। क्योंकि मनुष्य की अक्ल अपने जैसी दौड़ती है न। उसको छूने की कोई जरूरत नहीं थी। उसके बाद उसके जो पुजारी जो हमने देखे उनके सबके चक्र पकड़े हुए थे। वह जितने भी पुजारी हैं और उनके चक्र पकड़े हुए हैं और उसपर जो सिन्दूर चढ़ाया था और जो बेल चढ़ाया था वह सब पकड़ा हुआ था। मनुष्य को इतनी अक्ल जरूर है कि यह जागृत स्थान है लेकिन इतनी अक्ल नहीं है कि अब भी इसमें से vibrations पूरे आ रहे हैं कि आधे आ रहे हैं कि कौन से vibrations आ रहे हैं। तीन चक्र उस मूर्ति के भी पकड़े हुए थे। और मेरे समझ में नहीं आया। जब मैं अन्दर मंदिर में जाकर बैठी तब पंडित जी कहने लगे कि आप अन्दर नहीं बैठ सकते। आप बाहर बैठिए और आप उनको हाथ नहीं लगा सकते। तो मैंने यह सोचा कि अगर हम इसको हाथ भी नहीं लगा सकते तो इसको हम क्या कर सकेंगे ? यह मूर्ति तो ऐसी ही रह जाएगी। तो पीछे से गए और पीछे से जाकर के वहाँ उस मूर्ति की ओर हमने देखा और पीछे से अपना सर, अपना सहस्रार ही जाकर लगा दिया तो उसके अन्दर से इतनी जोर से vibration निकल आई। इसलिए यह जान लेना चाहिए कि आप जीवंत हैं। आपके अन्दर कहीं अधिक, इन मंदिरों से भी अधिक, <u>vibrations</u> आ सकते हैं। आप मगर जीवंत रहिए। मरी हुई चीज़ों का तो जो लोग शौक करते हैं या मरी हुई बातों का शौक करते हैं वे लोग मर जाते हैं। जिन्दा होते हुए भी मर जाते हैं। जड़ वस्तुओं के पीछे में भागना एक इस तरह का शौक है। उसकी ओर भागना या उससे भागना दोनों एक ही चीज़ हैं। सन्यास भी लेना वही चीज़ है और सन्यास से भागना भी वही चीज़ है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। आप अपनी स्थिति पर खड़े हो जाइए।

पहली चीज़ है आप अपनी स्थिति बनाइए। दूसरी चीज़ अपना धर्म बनाइए। धर्म का मतलब है आप अपने अन्दर में से इन vibrations को पूरी तरह से बहने दीजिए। आपका मन होता है कहीं गए। आपने देखा वहाँ एक आदमी गिर गया, दौड़िए, उसको फौरन पकड़िए, उसे vibrations दीजिए, बचाइए। दुनिया कहेगी, कहने दीजिए। आपके अन्दर से vibrations बह रहे हैं, यही आपका धर्म है। मैंने आपसे बताया था कि सोने का धर्म यह नहीं कि वह पीला है। उसका धर्म यह भी नही कि उससे कुछ जेवर बन सकते हैं। उसका धर्म बस एक ही है कि वह किसी चीज़ से खराब नहीं होता। इसी तरह हीरे का भी एक ही धर्म है कि वह हर चीज़ को काट सकता है व hardest है। इसी प्रकार मनुष्य का एक धर्म होता है कि उस परमात्मा को पा लेना और जान लेना और जिस मनुष्य ने उसे पा लिया है उस मनुष्य का एक ही धर्म होता है कि उस पाई हुई चीज़ को पूरी तरह से आत्मसात् करके पूरे संसार में प्रसारण करे। लेकिन इधर उधर की बातें और वही जड़ता के तरीके, उससे आप बिल्कुल न तो इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे। आपके vibrations खो जाएंगे और मेरी जितनी भी मेहनत है सब बेकार हो जाएगी। कोई भी धर्म संसार में ऐसा नहीं है जिसने vibrations की बात न कही हो। माने असली धर्म। किसी ने भी ऐसा नहीं कहा है कि vibrations नहीं होते हैं। हर एक जगह इसे रूह कहते हैं, इसे water of life कहते हैं कुछ भी कहते हैं लेकिन हर जगह कहा है कि vibrations होते हैं और हिन्दु धर्म में तो साक्षात् आप जानते हैं कि इसी पर न जाने कितनी विवेचना की गई है। आदि शंकराचार्य ने भी। इसमें कुछ पढ़ा नहीं जा सकता, कुछ लिखा नहीं जा सकता, कुछ समझा नहीं जा सकता। यह होना होता है। बहुत से लोगों को होता नहीं है। जो पढ़े–लिखे अपने को विद्वान समझते हैं, ऐसे महामूर्खों को कुछ नहीं होता। मैं क्या करूँ यह तो अपने आप ही अकस्मात् आपको innocense में ही होता है, बहुतों को हो जाता है, हज़ारों को होता है आप को भी होना चाहिए। लेकिन बेकार की झूठी बातों को आप पकड़ कर रखिएगा। और अगर आप झूठी बातें करियेगा और झूठी बातों में ही आप पूरी तरह से जमें रहियेगा जो आप को जड़ बना रही हैं तो इस जड़ता से आप भी तो जड़ ही हो जाएंगे। जो चैतन्य आपके अन्दर से बह रहा है उसको आप कैसे किस प्रकार प्रसारित कर पाए। थोड़ा बहुत समय इसके लिए देना पड़ेगा यह मैं पहले कह चुकी हूँ, यह बात सही है। लेकिन यह priority की चीज है। आपके priority बदलने पड़ेगी। थोड़े दिन जब इस priority आ जाएँगे तो इसका मजा आपको आने लगेगा। सारे संसार में जितना सुख और मजा है सारे संसार का जितना आर्कषण और सौन्दर्य है, सारे संसार का जितना भी धन दौलत सब कुछ जो भी है , जो कुछ भी जिसे आप दौलत, सब कुछ, जो भी है, जो कुछ भी जिसे आप knowledge कहते हैं, जिसे आप ज्ञान करके समझते हैं। उन सबका स्रोत यह है। ये जानता भी है, प्यार भी करता है और सौन्दर्य भी है। यही वह शक्ति है जिसके बारे में हमने हजारों बार पढ़ा है और हजारों बार इसके बारे में हमने जाना है। इसी शक्ति के सहारे सारी सृष्टि की रचना हुई है और इसी के द्वारा आप भी उसको जानेंगे जो यह शक्ति है। यह एक बहुत बड़ी बात है। वह धीरे धीरे फैलना चाहिए। इतनी बड़ी बडी बात इतनी जल्दी नहीं फैलती, कोई सी भी जीवन्त चीज़ है धीरे धीरे पनपती है। मैं देखती हूँ जड़ जम गई है, उसकी जड़ बहुत गहरी जम गई है। अभी मैं शहरों से

होकर आई हूँ । मुझे बड़ी खुशी है कि वहाँ के scientist लोगों ने इसे बिलकुल scientifically कर दिया। अपने पौधों पर, इस पर, उस पर experiment करके एकदम scientific चीज़ बना ली है और वे कह रहे थे कि हम goverment से भी इसके लिये लड़ेंगे कि यही चीज़ सत्य है और बाकि सारे जितने भी असत्य हैं उसका नाम सत्य देने से वह सत्य नहीं होता। आपकी अपनी शक्ति आपको अपनी शक्ति उस शक्ति से एकाकार हो जा रही हैं जो आप के अन्दर बसी हुई हैं। जैसे कि जमना में बहुत से मटके रहते थे और उन मटको में पानी रहता था। जब उन मटको में छेद हो जाता था तभी वह पानी और उन मटको का पानी एकाकार हो जाता था उसी तरह से अपना भी हाल होना चाहिए। आप भी उसको उसी तरह से जाने व पाएं जैसे कि गोपी और गोप कृष्ण के जमाने में खोज रहे थे। और जानने के प्रयत्न में थे और आज आपको वह चीज़ पूरी तरह से मिल गई है। मैंने आपको अनेक बार बताया है कि गोप से गोपनीय इसको जितनी भी गहराई की बातें हैं मैं सब आप को बताने के लिए आई हूँ। लेकिन आप उसके अधिकारी हो जाएं। जिनको अधिकार ही नहीं है उनको यह बात नहीं बता सकती थी। इसीलिए जो बात आज मैंने सर्वप्रथम कही है इससे पहले कभी भी इतना खोलकर कही नहीं। आप में से यदी किसी को प्रश्न पूछना हो तो एक दो आदमी को पूछने दीजिए। जिसे प्रश्न पूछना है कृपया प्रश्न पूछें। जरूर पूछना चाहिए प्रश्न। क्योंकि मुझे पता ही नहीं तुम लोगों का क्या प्रश्न है।

मुम्बई

30.3.75

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कल मैंने आपसे बताया था, सबको सुनाई दे रहा है या नहीं ? पीछे में सुनाई दे रहा है ? आपसे मैंने यह बताया था कि मनुष्य का शरीर उसका मन, उसकी बुद्धि, आदि उसका जितना भी पूरा व्यक्तित्व है, उसकी जितनी भी personality है वह सब कुछ तीन तरह के शक्ति से बना हुआ है। एक शक्ति जिससे कि हम अस्तित्व बनकर रहते हैं। वह मनुष्य में प्राण स्वरूप होती है जिसका स्थान ह्रदय में होता है। दूसरी शक्ति जो कि हमारे पेट में होती है जिसके कारण हमारी आज मनुष्य दशा तक उत्क्रान्ति हुई है, वह है धर्म। और तीसरी शक्ति जो एक चेतनामय है जिससे हमें बुद्धि आदि अनेक चेतना के अवलम्बन मिले हैं। लेकिन यह तीनों ही शक्तियाँ सर्वव्यापी परमात्मा के प्रेम से पाई जाती हैं। परमात्मा बन सर्वव्यापी प्रेम इन तीनों शक्तियों को संचालित करता है, समग्र बनाता है, माने integrate कर देता है। जैसे कि जड वस्तु में भी जो vibrations दिखाई देते हैं, जिसे electromagnetic vibrations कहते हैं, वो भी उसी स्थिति स्वरूप, प्राण का ही सोया हुआ स्वरूप है। जब वह जाग जाता है तब वह प्राण हो जाता है। जो एक छोटे से amoeba में पेट में भूख लगती है, वही मनुष्य के अन्दर में धर्म के रूप में जागृत हो जाती है। धर्म हर एक वस्तु मात्र में है। जैसे कि मैंने आपसे बताया था कि सोने का धर्म यह नहीं है कि वह पीला है। उसका धर्म यह भी नहीं है कि उससे आप जेवर बना सकते हैं। लेकिन सोने का धर्म यह है कि वह किसी भी हालत में tarnish नहीं होता, खराब नहीं होता। अब जो तीसरी चीज़ है चेतना, वो मनुष्य में, मनुष्य के मस्तिष्क में, सबसे अधिकतर प्रगल्भ है, developed है। मनुष्य पूरी तरह से इन तीन शक्तियों में पूर्णतया mature हो गया है, बड़ा हो गया है। अब उसकी तैयारी हो गयी है कि उन तीनों शक्तियों का संचय, जो एक शक्ति परमात्मा का प्यार है उनका प्रेम है उसे जाने। जो एक शक्ति ही तीनों में बंट गई है वो एकाकार हो जाए, उस परम शक्ति का एक थोड़ा सा अंश हमारे अन्दर कुण्डलिनी के रूप में त्रिकोणाकार अस्थि में सोया हुआ रहता है। जिस वक्त कोई भी ऐसा इन्सान जिसने इस प्रेम को अपने अन्दर ले लिया हो और जिसके अन्दर यह शक्ति से समग्र होकर integrate हो बह रही हो, माने कि जो आदमी realised soul हो, वह किसी साधक के ऊपर अनुग्रह करता है तभी कुण्डलिनी, आपकी माँ, जागृत होती है। लेकिन वैसा साधक अगर सोचे कि नहीं मैं ही अपनी कुण्डलिनी जागृत करूँगा तो वैसी ही बात हुई है कि जो गाड़ी चलाना नहीं जानता है वह मोटर चला रहा है। जिसको मोटर चलाना नहीं आता है ऐसा अगर आदमी मोटर चलाए तो मोटर का कचरा बन जाता है। इसी प्रकार जो लोग अपनी कुण्डलिनी स्वयं जागृत करना चाहते हैं तो वे अपनी सारी ही कुण्डलिनी की संस्था को उसके सारे instrument को पूरी तरह नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। अगर कोई अन्जान आदमी इस कुण्डलिनी को जगाना चाहता है तब भी यही हो जाता है। कोई अगर अपवित्र आदमी आपकी माँ के ओर अग्रसर होता है और उसको जगाना चाहता है तब भी ऐसा ही हो जाता है। और कोई अगर आदमी आपको पैसे के लिए, आपको लूटने के लिए, आपको

बेवकूफ बनाकर के कुण्डलिनी पर हाथ डालता है तब भी यही काम हो जाता है। वही इन्सान जो परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से पूरी तरह प्लावित हो, जिसके अन्दर सामूहिक चेतना पूरी तरह से बह रही हो, इस बात का अधिकारी है कि कुण्डलिनी पर आमन्त्रण का आरोप करे। कुण्डलिनी का आमन्त्रण ऐसे वैसे आदमी भेज नहीं सकते। और जो इस तरह से भद्दे प्रयत्न करते हैं वह बड़े भारी पाप के भागीदार हो जाते हैं। जो दूसरे की कुण्डलिनी नष्ट कर देते हैं, उनकी स्वंय की कुण्डलिनी जन्म जन्मांतर के लिए नष्ट हो जाती है और वे कीड़े मकोड़े के जन्म लेते हैं। इसलिए कुण्डलिनी के साथ खेलने का साहस कभी न करें। बाकी सब चीज़ों में ठीक है आप चोरी करिए, आप smuggling करिए कोई हर्ज नहीं लेकिन आप कुण्डलिनी के मामले में मेहरबानी से दूर रहिए। कुण्डलिनी को जागृत करने का अधिकार परमात्मा के सिवाय और कोई नहीं दे सकता। जब तक स्वयं परमात्मा की शक्ति इसका अधिकार आपको न दे तब तक यह आपके पास अधिकार नहीं है कि आप college में जाकर इसकी degree ले लें और कहें कि हम कुण्डलिनी जागृत कर सकते हैं इस तरह के झूठे बहुत लोग आजकल संसार में दिखाई दे रहे हैं और वे जान नहीं रहे हैं कि हम कितना बड़ा घोर, अत्यन्त भंयकर पाप कर रहे हैं। कुण्डलिनी का काम अत्यंत कुशलतापूर्वक करना पड़ता है। इतना ही नहीं अत्यंत प्रेमपूर्वक करना पड़ता है और सबसे बड़ी बात है कि वह प्रेम भी अत्यंत पवित्र होना पड़ता है। पवित्रता यह धर्म के रोम–रोम में छाई हुई शक्ति। जो आदमी पवित्र नहीं होता है, जो दूषित विचारों से भरा रहता है, जिसका सारा चित्त दूसरों का पैसा, दूसरों की पत्नी या दूसरों को लूटने की ओर होता है ऐसे आदमी को चाहिए कि वह अपना समय और किसी कार्य में लगाए लेकिन कुण्डलिनी के ऊपर अपना हाथ न रखे। कुण्डलिनी जितनी सौम्य है जितनी कृपालु है, जितनी वरदायनी है, जितनी मातृ हृदय से प्लावित है उतने ही उसको संभालने वाले गण, deity जो कि उसकी रक्षा करते हैं, वह प्रखर और तेजोमय हैं। किसी भी प्रकार का खेल जब कुण्डलिनी के साथ होता है, तो वह पूरी तरह से कुण्डलिनी की रक्षा में तत्पर रहते हैं और ऐसे लोगों को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। जो इस तरह का पाप करते हैं। सबसे बड़ा पाप, संसार में यही है कि किसी साधक की कुण्डलिनी अनाधिकार चेष्टाओं से घायल करना। इससे बढ़कर कोई भी पाप संसार में नहीं है। माँ की हत्या से भी बढ़कर यह पाप है कि आप किसी की कुण्डलिनी को हाथ लगा रहे हैं अनाधिकार चेष्टा से।

परमात्मा ने यह सारी सृष्टि अपने प्रेम से बनाई हुई है और उसे पवित्रता से भरा हुआ है। यह सारी सृष्टि अत्यन्त पवित्र है। उसमें जो कुछ भी अधर्म है और बुरा है वह मनुष्य ने ही संचित किया हुआ है। क्योंकि मनुष्य ही ऐसा जीव संसार में बनाया गया जो स्वतन्त्र है। बाकी सारी ही सृष्टि परमात्मा के इशारे पर नाचती है। एक पत्ता भी उनके इशारे के बिना नहीं हिलता। सारी सृष्टि में जो अधर्म से अधर्म है, जो नर्क से नर्क है जो पाप से बढ़कर पाप हैं, वह मनुष्य का ही बनाया हुआ है। इसकी रचना मनुष्य ही ने की है और ऐसे ही गिरे हुए अधर्म लोग जब अधर्माधम की स्थिति में पहुँच जाते हैं तब वे शैतान के रूप में विचरण करने लग जाते हैं। शैतान परमात्मा ने नहीं बनाया, उसको मनुष्य ने बनाया है और वह शैतान की पूजा करते हैं क्योंकि उसने ही उसकी रचना की है। जब तक हम शैतान को शैतान नहीं कहेंगे, जब तक हम अधर्म को

अधर्म नहीं कहेंगे, जब तक हम बुराई को बुराई नहीं कहेंगे, तब तक हमारे अन्दर अच्छाई जागृत नहीं हो सकती। आपने सुना होगा कि जब लोग मक्का जाते हैं तब रास्ते में एक वहाँ शैतान की मूर्ति बनाकर बिठाई गई है और सब लोग अपने घर से एक पुरानी चप्पल लेकर वहाँ जाते हैं और पहले शैतान को मारते हैं, माने कि उसको धिक्कारते हैं। उसको धिक्कारे बगैर परमात्मा आप को स्वीकार ही नहीं करने वाले और उनके स्वीकारे बगैर कुछ भी आप को नहीं मिलने वाला, आप चाहे कुछ भी कर लीजिए। उनकी मेहर आप पर होनी चाहिए, उनकी दया आप पर होनी चाहिए, उनका प्रेम आपकी ओर उमड़ना चाहिए। वह अत्यंत दयालु, करुणामय शक्तिमान प्रभु परमेश्वर हैं। लेकिन अगर आप अधमाधम कार्य में बैठे हुए हैं और आप उस शैतान की पूजा कर रहे हैं जिसने संसार में एक अजीब तरह का चक्र चला दिया है, जिसने अधर्म का एक चक्र चलाया हुआ है और जिसके बहुत सारे अनुचर संसार में पैदा होकर अधर्म को फैला रहे हैं, जब तक उस शैतान को तुम पूरी तरह से धिक्कार नहीं करोगे तब तक परमात्मा भी आपको स्वीकार नहीं करेगा। इस मामले में अगर आधा अधूरापन है आपके अन्दर, तो अपने ही साथ छल कपट कर रहे हैं। उसको आपको पूरी तरह से आपको धिक्कारना होगा। उसको पूरी तरह से आपको छोड़ना होगा नहीं तो जो आपके अन्दर में मिथ्या है वह आपके अन्दर में बैठा रहेगा जो सत्य आपके अन्दर है वह प्रकट नहीं होगा। जब तक आपके अन्दर सत्य प्रकट नहीं होगा, संसार में भी सत्य कैसे फैल सकता है। जैसे समझ लीजिए कि सूर्य पर अगर बादल छा जाएं तो अन्धेरा आ जाता है और अगर बादल हट जाएं तो सूर्य फिर से चमकने लग जाता है। इसी प्रकार मनुष्य ने ही अत्यन्त अधर्म कार्य करके जो शैतान तैयार किया हुआ है उस शैतान के बादल आज भी संसार के ऊपर इतनी बुरी तरह से मंडरा रहे हैं कि हो सकता है कि अगर सहज योग पूरी तरह से न पनप पाया तो वह दिन दूर नहीं जबकि इन लोगों का सबका सर्वनाश हो जाए और अन्धकार के गर्भ में हम डूब जाएं। उस अन्धकार में भी सहजयोग में जिन जीवों ने परम कार्य किये हुए हैं वो सितारों जैसे चमकेंगे, सितारों जैसी उनकी महिमा होगी। यह वह बड़ा आपका स्थान है। आज आप इसको समझ नहीं पा रहे हैं लेकिन इतिहास में इस बात की चर्चा होगी कि कितने सहजयोगियों ने सत्य पर अपने पैर जमा लिए थे।

आधा अधूरापन छोड़ दीजिए छोटी–छोटी बातों की ओर उलझने की जरूरत नहीं है। आप बहुत बड़ी चीज़ पर जमे हुए हैं। इतनी बड़ी चीज़ पर जमने वाले लोगों को चाहिए कि छोटी मोटी चीज़ों की ओर बिल्कुल भी ध्यान न दें। आपके अन्दर की भी शक्ति आपकी स्वयं की तैयारी पर ही प्रभावित होती है। अगर आपकी तैयारी कम हो तो वह शक्ति भी हल्का ही अपना जोर दिखायेगी। अगर आपकी तैयारी पूरी तरह से है और शैतान को पूरी तरह से धिक्कारने की आपके अन्दर शक्ति है तो आप ही में से बड़े–बड़े सन्त और गुरुजन निकलने वाले हैं। एक बड़ी भारी पीढ़ी आज जन्म ले रही है। पाँच साल के बच्चे से लेकर आज ऐसे नवोदित बहुत बड़े–बड़े जीवों ने एकदम से संसार में जन्म ले लिया है जैसे कि ऊपर से कहीं से सारा उनका पूरा तबका इकट्ठा ही उतर आया हो। बहुत से बच्चे, मैं देखती हूँ कि वह पार ही पैदा हुए हैं। पर नीव के पत्थर तो आप ही हैं। सहजयोग के नीव के पत्थर आप लोग हैं। आपको मैंने पहले भी अनेक बार बताया है कि जो लोग आज धर्म के झूठे

झगड़े खड़े किए हुए हैं, जो आपस में नफरत से एक दूसरे को देख रहे हैं और उसमें धर्म का नाम इस्तेमाल कर रहे हैं, यह शैतान के बच्चे हैं, ये परमात्मा के भेजे हुए लोग नहीं हैं। परमात्मा ने कभी भी द्वेष व दुष्टता को मान्यता नहीं दी है। लेकिन उसका खण्डन किया है उसका संहार किया है। जो लोग अपने को बहुत छोटे दायरे में बाँधे हुए हैं कि हम फलाने हैं और ढिकाने हैं, वो लोग अनन्त की गोद में नहीं जा सकते। जिसकी कोई सीमा नहीं है वह असीम में बैठा हुआ है। अपनी सीमाएं आपको तोड़नी पड़ेंगी जो आपने मूर्खता से बाँधी हैं। कोई भी धर्म आपको सीमा में नहीं बाँधना चाहता है लेकिन जो मनुष्य ने मूर्खो जैसे धर्म बनाए हैं उसका तो कोई इलाज ही नहीं कर सकते।

वास्तव में दो ही धर्म संसार में हैं– एक है धर्म और दूसरा है अधर्म। तीसरा कोई धर्म है ही नहीं। एक है धर्म जिसकी धारणा अन्दर होती है और दूसरा है अधर्म। जितने बड़े–बड़े गुरुजन हो गए हैं वह धर्म के लिए लड़े और उस वक्त जो अधर्म में थे उनसे लड़ते रहे – फिर उसका नाम आप मुसलमान कहिए, चाहे उनका नाम आप हिन्दु कहिए, चाहे उनका नाम आप Christian कहिए। लेकिन उनके जितने भी followers थे, अनुयायी थे उन लोगों में वो सत्यता नहीं थी। उन्होंने अपने छोटे–छोटे group बना लिए और अधर्म के झगड़े होने लगे। एक अधर्म से दूसरा अधर्म लड़ने लगा। धर्म में झगड़ा कोई नहीं होता है। धर्म में कलह नहीं होता है। धर्म सब एक हैं। सबके अन्दर एक है। सबमें एक ही बैठता है। उसमें कोई argument नहीं होता है। जब आप लोग किसी की ओर हाथ करके खड़े होते हैं तो सभी बताएंगे कि माँ इस आदमी से हमें यहाँ जलन आ रही है,माने उसका आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। सबके सब बताएंगे, एक फर्क नहीं बताएगा, दूसरा फर्क नहीं बताएगा। जो कोई भी इस हॉल के इस छत को देखेगा तो यह बताएगा कि यह छत सफेद रंग का है दूसरा रंग नहीं बता सकता है। जब आप हँसेंगे तो एक ही ढंग से हँसते हैं, जब आप रोएंगे तो आपकी आँख से आँसू आएंगे और एक ही ढंग से आप रोएंगे। उससे भी कितना अधिक धर्म का अपना स्वरूप है जो कि व्यापक है और सबके अन्दर एक है। उस धर्म में झगड़ा होना सम्भव ही नहीं हो सकता, कलह होना सम्भव ही नहीं हो सकता। कलह जहाँ आया समझ लीजिए कि एक अधर्म दूसरे अधर्म से लड़ रहा है। धर्म कभी धर्म के साथ लड़ नहीं सकता। जो आदमी अपने को धार्मिक कहकर के और दूसरे को कहता है कि आप भी धार्मिक, हम भी धार्मिक लेकिन लड़ लें, वो धर्म को जानता नहीं। सहजयोग में यह किस तरह से होता है, यह समग्रता कैसे आती है ? कुण्डलिनी का उद्दीपन कैसे होता है ? ' आदि, सभी कुछ आपको पहले भी बताया है और फिर भी मैं आपको बताऊंगी किसी वक्त। लेकिन यह तो देखने का मजा है जब आप खुद ही इस शक्ति को पा लेते हैं जबकि पहली शक्ति, जो कि आपके हृदय में है जिससे आपके प्राण हैं, वह प्रेम हो जाती है, और जो आपके पेट में धर्म है वह सारे संसार की जागृति हो जाती है। और जो आपकी चेतना आपके सर में है वो सारे संसार का ज्ञान हो जाता है। उसी वक्त आप जान सकते हैं कि यह कुण्डलिनी का उद्दीपन आपके इन हाथों से कैसे हो रहा है। आप ही के इशारों से कुण्डलिनी कैसे उठ रही है और आप ही के बंधनों में ये अधर्म कैसे चरमरा रहा है। और आप ही के खींचे हुए तारों में यह किस तरह से मरा जा रहा है। आप ही देख सकते हैं कि आप के जो दो चार

तीर कमान इस अधर्म को लग जाएं कि यह किस तरह से अपना मार्ग छोड़ कर चला जाता है और कुण्डलिनी अपने रास्ते पे अपने आप साफ–साफ आ जाती है। किस प्रकार शरीर में छिपी हुई व्याधियाँ एक दम से नष्ट होकर के, कुण्डलिनी सामने ऊपर एक गंगा जैसे भागीरथ ले आए थे, उसी तरह से उतरती चली आती है। गंगा को लाने के लिए भगीरथ ने अनेक प्रयत्न किए थे और इस कुण्डलिनी को लाने के लिए भी मैंने अनेक प्रयत्न किए हुए हैं, पूर्व जन्म में भी और इस जन्म में भी। लेकिन अब इसका फल आप लीजिए क्योंकि आपके दरवाजे पे ही गंगा बह रही है। आपके इशारे पर कुण्डलिनी चलेगी। आप रास्ते चलते हुए लोगों को जागृति दे सकते हैं। आपके हाथ से अनेक cancer जैसे रोग ठीक हो जाते हैं यह बात सही है और होनी ही चाहिए, होते ही है। यह सब कैसे हो रहा है ? उसका कारण यह है कि आप उस सर्वव्यापी परमात्मा के प्रेम की शक्ति के अंग हो गए हैं जो आप इस्तेमाल कर रहे हैं। आपके अन्दर से वही शक्ति प्रवाहित हो रही है और आप उस शक्ति का कार्य कर रहे हैं। अब इसमें झगड़े का कौन सा सवाल उठता है ? क्या मेरा यह हाथ इस हाथ से हर समय झगड़ा करता रहता है ? जिस दिन यह झगड़ा शुरू हो जाएगा तो हम यह कहेंगे कि यह हाथ इससे अलग हो गया, यह कोई हमारा हाथ नहीं है। इसी प्रकार इस सर्वव्यापी शक्ति को हमारे अन्दर हम पा लेते हैं तो हम सर्वशक्तिमान हो जाते हैं। बहुत से लोगों को पहले भी यह शक्ति मिली है। बहुत कम लोगों को कहना चाहिए, क्योंकि जब मैंने पढ़ा ज़ेन को, ज़ेन छठी शताब्दी में जापान में शुरु हुआ था, और उसमें भी यही कुण्डलिनी जागरण का कार्यक्रम किया था निकिता माँ ने और कुल 26 आदमी छठी century से लेकर अभी तक पार हुए हैं और अभी कम से कम तीन चार century से तो कोई पार ही नहीं हुआ है। और आप समझ सकते हैं कि यहाँ हज़ारों आदमी पार होते जा रहे हैं। बहुतों को हुआ है, किसी–किसी को नहीं भी होता है। लेकिन हो ही जाता है। आज तक ऐसा कोई नहीं है कि वह आता रहे और उसको न हो। जो भी आया यहाँ बैठा ,उसने पाने का प्रयत्न किया, सब लोग पार हो गए। ऐसा हमें आज तक मालूम नहीं जो पार नहीं हुआ। लेकिन एक चीज़ जरूर तैयार करके आना चाहिए कि शैतान को आपको जूते मारने पड़ेंगे। शैतान को आपको पहचानना पड़ेगा, उसको आपको छुट्टी देनी पड़ेगी, उसको अपने हृदय से निकाल देना पड़ेगा। और कौन शैतान है और कौन परमात्मा है उसकी पहचान इन्हीं चैतन्य लहरियों से हो सकती है। अगर आपके पास नहीं हैं तो जिनके पास है उनकी बात सुनिए, जो इसको जानते हैं उनकी बात सुनिए। जिन्होंने इसको पड़ताला है उनकी बात सुनिए। इसी प्रकार आप जान सकेंगे कि कौन शैतान है और कौन धर्ममात्मा, कौन असली गुरु है और कौन नकली है। संसार में जैसे असली फूल होते हैं वैसे plastic के भी फूल होते हैं। लेकिन उसकी पहचान आपके आँख से, नाक से, मुँह से, हर एक चीज़ से हो सकती है कि यह plastic का फूल है या कि सच्ची फूल है। लेकिन धर्म को जानने के लिए सिर्फ vibrations चाहिएं। उसके बगैर आप जान ही नहीं सकेंगे कि यह आदमी पाखण्डी है, कि झूठा है, कि अधर्मी है, यह राक्षस है। यह आदमी धर्मात्मा है और यह आदमी परमात्मा है, यह आदमी अवतार है। यह आदमी बहुत बड़ी शक्ति है। जब तक आपके हाथ में vibrations नहीं आएंगे आप जान नहीं सकते। इसीलिए यह चीज़ सबसे पहले आपको पा लेना

चाहिए कि असली vibrations आपके हाथ से ठंडे–ठंडे आने चाहिए जैसे कि कोई cooler से आ रहे हों, इस प्रकार आपके अन्दर से आने चाहिए। इसके अलावा आपके विचार आपके काबू में आ जाते हैं, आप निर्विचार हो जाते हैं, और विचारों की ओर देखते हैं कि आप निर्विचार हो गए, कोई भी विचार नहीं आ रहा है। यह असलियत है, यह सत्य है। इसमें मैं कोई झूठा वादा नहीं कर सकती। मेरे हाथ का कोई झूठा recommendation नहीं है। इसमें कोई झूठी बात नहीं हो सकती। जब तक आप पार नहीं होंगे तब तक आप मेरे कुछ नहीं लगते चाहे मेरे कुछ भी लगते हों। कोई कितना भी रुपया दे मैं पार नहीं कर सकती चाहे आप कितने भी पढ़े लिखे हों मैं पार नहीं कर सकती। आप घर में बैठिए। आप तभी पार हो सकते हैं जब हो सकते हैं, जब हो गए हों। कोई भी हों आप, मैं मजबूर हूँ। मैं आपको ऐसा झूठा certificate नहीं दे सकती। इसमें झूठ नहीं चल सकता, किसी भी तरह का झूठ नहीं चल सकता इसमें। यह सच्चाई होनी चाहिए। आपको खुद अनुभव होना चाहिए। आपके अन्दर दिखाई देना चाहिए और आपके हाथ से इसका बहता हुआ प्रवाह से दूसरों को भी जागृत करना चाहिए। तभी आप पार हुए हैं। हाँ मैं आपको धो पोंछ के साफ कर दूंगी, आपको प्यार से साफ कर दूंगी, आपकी कुण्डलिनी को समझा दूंगी, सब कुछ कर दूंगी, लेकिन यह होना पड़ेगा। जिनके नहीं होता है वह दुनियाभर का पाखण्ड रचते हैं और दुनिया भर की चीजें करते हैं और बातें बनाते हैं। उसकी मुझे परवाह नहीं है। लेकिन तुम लोग भी उसकी परवाह न करो और अपना ही कल्याण साधो, अपना मंगल साधो। अपने को सत्य के रास्ते में रखो। चाहे दो चार लोग कम हों या चाहे हज़ार लोग ज्यादा हों। इससे फर्क नहीं पड़ता। हम लोग अब ध्यान में जाएंगे। सब लोग इस प्रकार हाथ रखें। आँखें अभी शुरु में बंद रखें ....।

2003 शिवरात्रि पूजा पर माताजी के बायें हृदय से चैतन्य निकलते हुए ५ मिनट बाद पूरे फोटो से चैतन्य निकलता हुआ।

मुगल सराय सैंटर–नवरात्रि पूजा 2003 हवन में दुर्गा रूप अग्निशिखा